A Daily News Magazine

इंदौर

रविवार, 18 मई, 2025

इंदौर एवं भोपाल से एक साथ प्रकाशित

वर्ष 10 अंक 218, नगर संस्करण, पृष्ठ 8, मूल्य रू. 2

सुबह सवेरे

subahsaverenews@gmailĐcom

facebookĐcom/subahsaverenews

wwwĐsubahsavereĐnews

twitterĐcom/subahsaverenews

शिवालय

11वीं शताब्दी में परमार वंश के राजा भोज द्वारा निर्मित भोजपुर मंदिर की छत कुछ बरस पहले तक अधूरी थी। मान्यता थी कि मंदिर का निर्माण एक ही रात में होना था, लेकिन छत का काम पूरा होने से पहले ही सुबह हो गई। इस कारण मंदिर की गुंबदाकार छत खुली छोड़ दी गई थी। पुरातत्व विभाग की पहल पर गुंबद को आकार दिया गया है।

फोटो: महेश मुद्गल

सुप्रभात

कमर में बाँधे बम
हाथो में पकड़े हथियार
बेहोश खड़े हैं
मारने को -मरने को
काश ! अंगुलीमाल की तरह
राह पर मिल पाते इन्हें भी तथागत .
इन्हें किसी भगवान की नहीं
चिकित्सक की जरूरत है।
--
उबलता है रक्त भीतर
और हम रास्ते खोजते हैं बाहर
राजनीति और कला को
धन को और गरीबी को
सीढ़ियाँ बनाकर
दूसरों पर सवार होने की इच्छा
असाध्य रोग है
हमें चिकित्सक की जरूरत है।
--
चिकित्सक हूँ मैं ~कहा था तथागत ने।

- सोनल

● सांसदों की जुबानी 'ऑपरेशन सिंदूर' की कहानी

दुनिया को सात 'महारथी' बताएंगे हमले की सच्चाई

सारी टीमों का हो गया ऐलान, 10 दिनों का होगा टूर

नई दिल्ली (एजेंसी)। भारत सरकार पहलगाम की घटना और 'ऑपरेशन सिंदूर' पर दुनिया को जानकारी देने के लिए सांसदों के 7 समूह भेज रही है। हर समूह में अलग-अलग पार्टियों के कम से कम 5 सांसद होंगे। उनके साथ एक सीनियर राजनयिक भी होगा। ये समूह अमेरिका, ब्रिटेन, यूरोपीय संघ, रूस, जापान, दक्षिण अफ्रीका और खाड़ी देशों जैसे अहम शहरों में जाएंगे। एनडीए सरकार ने ऑपरेशन सिंदूर और सीमा पार आतंकवाद के खिलाफ भारत का रुख बताने के लिए सर्वदलीय सांसदों के 7 डेलीगेशन बनाए हैं। ये डेलिगेशन दुनिया के बड़े देशों, खासकर संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद के सदस्य देशों का दौरा करेगा। संसदीय कार्य मंत्रालय ने शनिवार को डेलिगेशन को लीड करने वाले सांसदों के नाम जारी किए। इसमें कांग्रेस से एकमात्र सांसद शशि थरूर का नाम शामिल है। अब कांग्रेस ने कहा है कि उसने केंद्र को थरूर का नाम नहीं दिया था। संसदीय कार्य मंत्रालय ने डेलिगेशन का नेतृत्व करने वाले जिन 7 सांसदों के नाम जारी किए हैं, उनमें थरूर के अलावा

भाजपा से रविशंकर प्रसाद और बैजयंत पांडा, जदयू के संजय कुमार झा, डीएमके के कनिमोझी करुणानिधि, एनसीपी शरद की सुप्रिया सुले और शिवसेना (शिंदे गुट) के श्रीकांत एकनाथ शिंदे शामिल हैं। इनके नेतृत्व में सातों डेलिगेशन 23 या 24 मई को भारत से रवाना होगा। फिर अगले 10 दिनों के लिए दुनिया के बड़े देशों, खासकर संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद के सदस्य देशों में जाएंगे। वहां बताएंगे कि आतंकवाद के खिलाफ भारत का दृष्टिकोण क्या है और आपरेशन सिंदूर के तहत पाकिस्तान के खिलाफ एक्शन क्यों और कैसे लिया गया। सूत्रों के मुताबिक, ये प्रतिनिधिमंडल 21-22 मई को रवाना होंगे। ये सांसद पहलगाम में हुए आतंकी हमले और ऑपरेशन सिंदूर के बारे में दुनिया को बताएंगे। कुछ ऐसे लोग भी शामिल हैं जो सांसद नहीं हैं। कांग्रेस के सांसद सलमान खुर्शीद दक्षिण और दक्षिण-पूर्व एशिया जाएंगे।

वे दक्षिण कोरिया, जापान और सिंगापुर जैसे देशों में बात करेंगे। जेडीयू के सांसद संजय झा और श्रृंगला भी एक समूह का नेतृत्व करेंगे। सुप्रिया सुले (एनसीएसपी), और श्रीकांत शिंदे (शिवसेना) भी एक-एक समूह का नेतृत्व कर रहे हैं। सुले के समूह में राजीव प्रताप रूडी (बीजेपी), अनुराग ठाकुर (बीजेपी), मनीष तिवारी (कांग्रेस), बृज लाल (बीजेपी) और तेजस्वी सूर्या (बीजेपी) शामिल हैं। असदुद्दीन ओवैसी (एआईएमआईएम) भी एक प्रतिनिधिमंडल का हिस्सा होंगे। डीएमके नेता कनिमोझी रूस जाने वाले समूह का नेतृत्व करेंगी।

सूरत में सुरक्षा एजेंसी के मालिक का अपहरण, हत्या

सूरत (एजेंसी)। गुजरात के सूरत में एक सुरक्षा एजेंसी के मालिक के अपहरण और हत्या का मामला सामने आया है। अपहरणकर्ताओं ने उनके परिवार से तीन करोड़ रुपए की फिरौती मांगी थी। वहीं, किडनैपिंग के पांचवें दिन यानी 16 मई को सिक्योरिटी एजेंसी के मालिक चंद्रभान दुबे का शव एक बोरे में दो टुकड़ों में मिला। पुलिस को एक रिक्शा चालक पर शक है, जो किडनैपिंग वाले दिन उन्हें अपने रिक्शा से ले गया था। मृतक चंद्रभान के भतीजे नेहाल दुबे ने बताया कि चंद्रभान माताप्रसाद दुबे सूरत में सुरक्षा एजेंसी चलाते थे। वे 12 तारीख को रिक्शा से जाने के बाद लापता हो गए थे। चंद्रभान अपने परिचित रिक्शा चालक राशिद के साथ ही गए थे, लेकिन वापस नहीं लौटे। परिवार के अलथान पुलिस स्टेशन में शिकायत दर्ज कराई थी। चंद्रभान के मोबाइल से ही फिरौती मांगी थी।

मेट्रोपोलिटिन एरिया में बड़ी पंचायतें बनेंगी नगर परिषद

मुख्यमंत्री बोले, नगरीय निकायों को आर्थिक रूप से मजबूत बनाएं, सुविधाओं का करें विस्तार

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा कि प्रस्तावित भोपाल और इंदौर मेट्रोपॉलिटिन एरिया के दायरे में आने वाले नगरीय निकायों को हर तरह से मजबूत किया जाए। इन नगरीय निकायों की प्रशासनिक क्षमता और दक्षता को भी विकसित किया जाए। साथ ही आर्थिक मजबूती देने और आर्थिक रूप से बूस्ट किया जाए। ये निकाय आपसी समन्वय से आधारभूत सुविधाएं अपने क्षेत्र में विकसित करें। उन्होंने कहा कि ऐसी पंचायतें जिन्हें नगर परिषद बनाया जा सकता है उन्हें नगर परिषद बनाया जाए।

सीएम यादव ने ये बातें भोपाल और इंदौर मेट्रोपॉलिटिन एरिया को लेकर शनिवार को बुलाई गई बैठक में कहीं। अफसरों ने मुख्यमंत्री की मंशा के अनुरूप मप्र मेटोपॉलिटिन क्षेत्र नियोजन और विकास अधिनियम 2025 में शामिल प्रस्तावों के बारे में जानकारी दी। अधिनियम विधानसभा के मानसून सत्र में लाया जा सकता है। मुख्यमंत्री ने बैठक में

अधिकारियों से यह भी कहा कि दोनों ही मेट्रोपॉलिटिन एरिया के विकास के लिए समग्र विकास के प्रस्ताव बनाएं और लार्जर एरिया में सीवेज, वाटर सप्लाई, यातायात समेत अन्य सुविधाएं वृहद रूप से विकसित करें।

मुख्यमंत्री ने दोनों ही मेट्रोपोलिटिन एरिया के प्रजेंटेशन देखे। मेट्रोपॉलिटिन सिटी एरिया के गठन को लेकर आयोजित बैठक में भोपाल और इंदौर के साथ मेट्रोपॉलिटिन एरिया में जोड़े जाने वाले शहरी और ग्रामीण इलाकों को लेकर चर्चा की गई।

भोपाल कमिश्नर ने दो दिन पहले ली बैठक

भोपाल मेट्रोपॉलिटन सिटी में भोपाल, विदिशा, रायसेन, सीहोर और राजगढ़ को मिलाकर मेट्रोपोलिटन सिटी बनाने का काम होना है। इसके लिए 14 महीने में पांचों जिलों का सर्वे करने के साथ रीजनल डेवलपमेंट एंड इंवेस्टमेंट प्लान बनाया जाएगा। इस प्लान के आधार पर भोपाल को मेट्रोपोलिटन सिटी बनाया जाना है। संभागायुक्त भोपाल ने पांचों जिलों के कलेक्टर्स की मौजूदगी में बीडीए के सीईओ श्यामवीर सिंह ने प्रजेंटेशन दिया। यह पांच जिलों के आठ हजार वर्ग किलोमीटर के क्षेत्र को कवर करेगा जिसमें भोपाल, विदिशा, रायसेन, सीहोर और राजगढ़ शामिल किया गया है। इन जिलों को जोड़ने से महानगर की आबादी 35 लाख हो जाएगी। इसके लिए चार स्टेज में काम किया जाएगा। पहले चरण में टीम का गठन, सर्वे, बैठकें आयोजित कर अमलीजामा पहनाना, वर्क प्लान फाइनल करना, सभी विभागों का सर्वे अपने अपने एरिया में करना और विधानसभावार 18 विभागों का डेटा जुटाने का काम किया जाएगा। आखिरी स्टेज में इंजीनियरिंग, लागत अनुमान और वर्क प्लान की डीपीआर तैयार की जाएगी। बताया गया कि दो जून को डीपीआर बनाने के लिए टेंडर निकाला जाएगा। इसके आधार पर टैंडर लेने वाली कंपनी को डीपीआर बनाने का काम सौंपा जाएगा। इस डीपीआर के लिए 18 विभागों से डेटा मांगा गया है। पांचों जिलों के गांव और शहरों को एक दूसरे से जोड़ा जाएगा। सड़कों को एक दूसरे से जोड़कर आवागमन आसान किया जाएगा। इन जिलों के पर्यटन क्षेत्रों को जोड़ा जाएगा।

हर कोई चाहता है उसका नाम अखबारों की सुर्खियां बने

वक्फ कानून पर सुप्रीम कोर्ट का कड़ा रुख, नई याचिकाएं की खारिज

नई दिल्ली (एजेंसी)। सुप्रीम कोर्ट ने वक्फ (संशोधन) अधिनियम, 2025 की संवैधानिक वैधता को चुनौती देने वाली दो नई याचिकाओं पर विचार करने से मना कर दिया है। कोर्ट ने कहा कि हर कोई अखबारों में अपना नाम देखना चाहता है। अदालत इस मामले पर 20 मई को सुनवाई करेगी। इस सुनवाई में अंतरिम राहत पर भी विचार किया जाएगा। केंद्र सरकार ने कहा है कि अधिनियम को चुनौती देने वाली याचिकाएं हमेशा के लिए दायर नहीं की जा सकतीं। सुप्रीम कोर्ट में जस्टिस बी.आर. गवई और जस्टिस ऑगस्टीन जॉर्ज मसीह की पीठ ने यह टिप्पणी की। अदालत वक्फ (संशोधन)

अधिनियम, 2025 की वैधता को चुनौती देने वाली याचिकाओं पर सुनवाई कर रही थी। सॉलिसिटर जनरल तुषार मेहता केंद्र सरकार की ओर से पेश हुए। उन्होंने कहा कि अधिनियम को चुनौती देने वाली याचिकाएं हमेशा के लिए दायर नहीं की जा सकतीं। इसका मतलब है कि सरकार चाहती है कि इन याचिकाओं पर जल्द सुनवाई हो। एक याचिकाकर्ता के वकील ने कहा कि उन्होंने 8 अप्रैल को याचिका दायर की थी।

15 अप्रैल को सुप्रीम कोर्ट रजिस्ट्री द्वारा बताई गई कमियों को भी दूर कर दिया था। लेकिन उनकी याचिका को सुनवाई के लिए सूचीबद्ध नहीं किया गया। इस पर प्रधान न्यायाधीश ने कहा, ''हर कोई चाहता है कि उसका नाम अखबारों में आए।'' वकील ने पीठ से आग्रह किया कि उनकी याचिका को लंबित याचिकाओं के साथ जोड़ दिया जाए। पीठ ने कहा, ''हम इस विषय पर फैसला करेंगे।'' इसके बाद, पीठ ने इसे खारिज कर दिया। इसी तरह की एक अन्य याचिका सुनवाई के लिए आई, तो पीठ ने कहा, ''खारिज की जाती है।'' याचिकाकर्ता के वकील ने आग्रह किया कि उन्हें लंबित याचिकाओं में हस्तक्षेप करने की अनुमति दी जाए।

भोपाल का तापमान

अधिकतम 32 °c

न्यूनतम 25°c

सुबह सवेरे

इंदौर ■ रविवार, 18 मई 2025

जो अग्नि हमें गर्मी देती है , हमें नष्ट भी कर सकती है ; यह अग्नि का दोष नहीं है।

चाणक्य नीति

कारगिल में शहीद मनीष कुमार पंचतत्व में विलीन

● नवादा में अंतिम यात्रा में उमड़ी भीड़

नवादा (एजेंसी)। कारगिल में ड्यूटी के दौरान शहीद मनीष कुमार (22) शनिवार को पंचतत्व में विलीन हो गए। नवादा में उनके पैतृक गांव पांडेय गंगौट में ही राजकीय सम्मान के साथ उनका अंतिम संस्कार किया गया। दोपहर करीब 1 बजे मनीष का शव घर पहुंचा था। यहां अंतिम दर्शन के बाद पार्थिव देह श्मशान घाट लाई गई। इससे पहले जब पार्थिव शरीर नवादा पुलिस लाइन से घर लाया जा रहा था तब गाड़ी के पीछे 2 किमी लंबी बाइक रैली चलती रही।

हजारों की संख्या में लोग हाथों में तिरंगा लिए भारत माता की जय के नारे लगाते रहे।

भारत में खालिस्तानी समर्थकों को उकसा रही है आईएसआई

● पंजाब-हरियाणा में ऐक्टिव कर रही आतंकी नेटवर्क

नई दिल्ली (एजेंसी)। पाकिस्तान से भारत का तनाव भले ही कम हो गया हो, लेकिन भारत में अशांति फैलाने के एजेंडे पर पाक की खुफिया एजेंसी आईएसआई अभी भी काम कर रही है। सूत्रों के मुताबिक, आईएसआई ने युद्धविराम की घोषणा के बाद खालिस्तान समर्थकों को उकसाना शुरू कर दिया है, जिससे कि भारत में कोई बड़ी आतंकी

वारदात को अंजाम दिया जा सके। आईएसआई कनाडा में खालिस्तानी आतंकी संगठन सिख फॉर जस्टिस के चीफ गुरपतवंत सिंह पन्नू और दूसरे खालिस्तानी आतंकियों की मदद ले रहा है।

विवादों में राहुल गांधी का दरभंगा दौरा, होगा केस!

● सारे रूल्स ब्रेक कर बेडकर हॉस्टल में छात्रों से किया संवाद

दरभंगा (एजेंसी)। कांग्रेस सांसद और लोकसभा में नेता प्रतिपक्ष राहुल गांधी का दरभंगा दौरा विवादों में फंस गया है। स्थानीय प्रशासन की ओर से अनुमति नहीं मिलने के बाद भी राहुल गांधी ने दरभंगा के अंबेडकर छात्रावास में छात्रों के साथ संवाद किया। राहुल गांधी ने कहा कि केंद्र की सरकार सिर्फ 5 से 10 प्रतिशत लोगों के लिए काम कर रही है। 90 प्रतिशत लोगों से उनका कोई लेना देना नहीं है। लहेरियासराय थाना के सर्किल इंस्पेक्टर ललन कुमार ने बताया की पूरे इलाके में धारा 144 लागू थी, इसके बाद भी राहुल गांधी ने अंबेडकर हॉस्टल में प्रवेश कर गए।

आचार्य गोकुल प्रसाद त्रिपाठी व्याख्यान माला सम्पन्न

सत्ता भटक सकती है लोक प्रज्ञा नहीं : डॉ विजय बहादुर सिंह

सनातन पर गंभीर चिंतन की आवश्यकता है: प्रो.रमाकांत पाण्डेय

भोपाल। राधा वल्लभ त्रिपाठी ने सौंपी दुष्यन्त संग्रहालय को अपने पिता गोकुल प्रसाद त्रिपाठी की पाण्डुलिपियां।

आज दुष्यंत कुमार स्मारक पांडुलिपि संग्रहालय के राज सदन में आचार्य गोकुल प्रसाद त्रिपाठी स्मृति व्याख्यान माला का आयोजन किया गया। इस व्याख्यान माला में प्रोफेसर विजय बहादुर सिंह मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित थे ।कार्यक्रम की अध्यक्षता प्रोफेसर रमाकांत पांण्डेय ने की। गोकुल जन कल्याण समिति द्वारा आयोजित इस समारोह में आचार्य गोकुल प्रसाद त्रिपाठी जी की पांडुलिपियां,उनकी स्मृति में प्रकाशित स्मारिका संग्रहालय के अध्यक्ष रामराव वामनकर और सचिव करुणा राजुरकर को सौंपी गई। इस अवसर पर आचार्य गोकुल प्रसाद त्रिपाठी की स्मृति में विशेष व्याख्यान का आयोजन भी किया गया जिसमें प्रो. विजय बहादुर सिंह ने सनातन का स्वरूप विषय पर बोलते हुए कहा कि आज का कार्यक्रम इस बात का प्रतीक है कि आदमी का कर्म ही उसकी कीर्ति निरंतर बिखेरता रहता है दूसरी बात आचार्य गोकुल प्रसाद त्रिपाठी के व्यक्तित्व- कृतित्व की झलक उनके पुत्र श्री राधा वल्लभ त्रिपाठी में दिखती है और वह अपने पिता की परंपरा को आगे बढ़ा रहे हैं। सनातन पर अपने वक्तव्य में उन्होंने कहा कि सत्य, पवित्रता,अहिंसा,विवेक ,संयम जैसे आचरण ही सत्य है अतः सनातन शाश्वत है, अपरिवर्तनीय है ,परंतु धर्म समयानुकूल परिवर्तित होता रहता उसके उदाहरण सामने हैं कि प्राचीन काल में हमारे यहां यज्ञ में बलि दी जाती है थी परंतु आज बलि नहीं दी जाती। इस तरह से धर्म स्थिर नहीं है ,वह समय के साथ चलता है क्योंकि वस्तुतः धर्म मनुष्य के मस्तिष्क का आविष्कार है ।उन्होंने यह भी बताया कि आदिकाल से आज तक के इतिहास में हम देखें तो यह बातें सामने आती है कि सत्ता भटक सकती है परंतु लोक प्रज्ञा नहीं, क्योंकि लोक प्रज्ञा एक विश्वास के साथ चलती है।

इस अवसर पर कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे प्रोफेसर रमाकांत पांडे ने कहा कि सनातन एक गंभीर विषय है और इस पर एक लंबी चर्चा की आवश्यकता है जो हम भविष्य में आयोजित करेंगे। उन्होंने धर्म की व्याख्या करते हुए बताया कि धर्म सनातन से एक अलग विषय है और मैं ऐसा मानता हूं कि प्रत्येक व्यक्ति का धर्म उसका कर्म है और वह कर्म के माध्यम से अपने धर्म का निर्वाह करता है। इस अवसर पर डॉक्टर राधावल्लभ त्रिपाठी ने अपने पिता आचार्य गोकुल प्रसाद त्रिपाठी की छह पांडुलिपियां संस्कृत साहित्य संबंधी शोध लेख,लघु लेख संग्रह,श्रीमद् भागवत गीता का हिंदी में पद्य अनुवाद ,संस्कृत साहित्य पर नोट्स, संस्कृत में लेख, संस्कृत में कविताएं और हिंदी भजन ,गीत ,पारिवारिक मांगलिक गीत,संग्रहालय को भेंट किये। उन्होंने उनकी जन्मशताब्दी के अवसर पर प्रकाशित स्मारिका जीवन साधना भी संग्रहालय को भेंट की।

कार्यक्रम के प्रारंभ में संजय द्विवेदी ने मंगलाचरण प्रस्तुत किया ,तत्पश्चात श्री भगवान शर्मा एवं उमाकांत शर्मा ने गोकुल प्रसाद त्रिपाठी द्वारा रचित अभिनव सतसई के दोहों का पाठ किया ।आचार्य गोकुल प्रसाद त्रिपाठी का परिचय दुष्यन्त कुमार स्मारक पाण्डुलिपि संग्रहालय के अध्यक्ष श्री रामराव वामनकर ने दिया। कार्यक्रम में विश्व वाणी प्रकाशन की निदेशक दीपिका दुबे जी ने संग्रहालय को आचार्य गोकुल प्रसाद त्रिपाठी द्वारा रचित अभिनव सतसई और तुलसी के मानस का मर्म पुस्तकें भेंट की इस अवसर पर गोकुल प्रसाद त्रिपाठी जी के व्यक्तित्व- कृतित्व पर वक्तव्य विशिष्ट अतिथि श्री अशोक दुबे द्वारा दिया गया। कार्यक्रम का संचालन डॉक्टर स्मृति उपाध्याय ने किया तथा आभार प्रोफेसर राधावल्लभ त्रिपाठी जी ने व्यक्त किया कार्यक्रम में स्वागत उद्बोधन संग्रहालय की सचिव करुणा राजूरकर ने दिया। इस अवसर पर बड़ी संख्या में त्रिपाठी परिवार के सदस्य और साहित्यकार उपस्थित थे।

'तनाव घटाओ, व्यापार बढ़ाओ' स्टॉल पर उमड़ी भारी भीड़

भोपाल। ब्रह्मा कुमारीज के सहयोगी निकाय 'राजयोग एजुकेशन एवं रिसर्च फाउंडेशन के 'उद्योग प्रभाग' द्वारा 'इंडिया इंडस्ट्रियल इंजीनियरिंग एक्सपो 2025 (सेकंड एडिशन)' इंडस्ट्रियल एरिया कंपलेक्स गोविंदपुरा में एक विशेष स्टॉल का आयोजन सुख शांति भवन मेडिटेशन रिट्रीट सेंटर द्वारा किया गया है।

इस 'तनाव घटाओ, व्यापार बढ़ाओ' स्टॉल में सुख शांति भवन की निदेशिका आदरणीय राजयोगिनी नीता दीदी जी ने ने समझाते हुए कहा कि किसी भी व्यापार में सफलता के लिए पांच संसाधनों (मैन, मनी, मशीन, मटेरियल, मार्केट) का होना नितांत आवश्यक है। परंतु इन पांचो ही संसाधनों को व्यवस्थित रूप से चलाने के लिए मन का शक्तिशाली एवं शांत होना अधिक आवश्यक है। जिसके लिए राजयोग मेडिटेशन एक सरल एवं व्यवहारिक ध्यान की क्रिया है।ध्यान कुछ और नहीं, बल्कि अपने मन को सही दिशा देना है ताकि वह हर परिस्थिति में सकारात्मक रहे।जब हम ध्यान के माध्यम से अपने मन को सकारात्मक ऊर्जा से भरपूर रखते हैं तो हमें कई प्रकार के फायदे होते हैं जैसे कि तनाव रहित जीवन, संबंधों में मधुरता, कार्य एवं जीवन में संतुलन, खुशहाल परिवार, एकाग्रता की शक्ति का बढ़ना, क्रोध तथा विभिन्न प्रकार के व्यसनों से मुक्ति। साथ ही सशक्त मन में सदैव शुद्ध, सकारात्मक एवं उद्देश्यपूर्ण विचार ही आते हैं जिससे हम जीवन के हर कार्य में सफल हो पाते हैं।

वरिष्ठ राजयोगी भ्राता राम कुमार जी ने बताया कि चाहे व्यवसाय हो या कोई भी कार्य परंतु हर व्यक्ति का जो *मूल ध्येय है वह है जीवन में खुशी की प्राप्ति* जिसके लिए हम सभी अनेक उपाय भी करते हैं। उन्होंने आगे उदाहरण देते हुए कहा कि जैसे यदि हमें 20 मिनट की खुशी चाहिए तो हमें स्वादिष्ट भोजन ले सकते हैं, यदि हमें 3 घंटे की खुशी अनुभव करना हो तो हम एक फिल्म देख सकते हैं, यदि हमें 6- 8 घंटे की खुशी चाहिए तो हम किसी पार्टी में जा सकते हैं, यदि हमें एक दिन की खुशी चाहिए तो हम किसी यात्रा अथवा ट्रिप पर जा सकते हैं, परंतु यदि हमें स्थाई खुशी चाहिए तो उसका उपाय है मेडिटेशन अर्थात मन को सही दिशा में चलाने की विधि सीख लेना जिससे हम हर परिस्थिति में हर हाल में सकारात्मक सोच के साथ सदैव खुशी की अनुभूति कर सकते हैं। जिसके लिए कई प्रकार के निशुल्क कोर्सेज़ अधिकारियों एवं कर्मचारियों के लिए ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा चलाए जाते हैं। जैसे कि समय प्रबंधन कार्य एवं जीवन में संतुलन डिजिटल डिटॉक्स संबंधों में मधुरता तनाव मुक्त जीवन लीडरशिप ट्रेनिंग टीम बिल्डिंग इत्यादि।

इस प्रकार स्लॉट में आगंतुकों को मूल्य निष्ठ व्यापार करने एवं कुशल जीवन जीने के सूत्र बताए जा रहे हैं साथ ही साथ वर्चुअल रियलिटी हेडसेट के माध्यम से डीप मेडिटेशन के द्वारा मानसिक शांति की अनुभूति भी कराई जा रही है। सभी के द्वारा इस नई पहल को बहुत सराहा जा रहा है।

खेल एवं युवा कल्याण मंत्री श्री विश्वास सारंग जी ने द्वारा रिबन काटकर एवं दीप प्रज्वलन कर स्टॉल का शुभारंभ किया गया। साथ ही उन्होंने सभी से आह्वान किया कि सभी स्टॉल का अवलोकन अवश्य करें।

चीफ जस्टिस ऑफ इंडिया बी आर गवई ने मंज़र भोपाली को किया सम्मानित

भोपाल। पिछले दिनों सुप्रीम कोर्ट बार एसोसिएशन ऑफ इंडिया द्वारा सुप्रीम कोर्ट में आयोजित कार्यक्रम में अंतर्राष्ट्रीय कवि मंज़र भोपाली को सम्मानित किया गया।इस अवसर पर सुप्रीम कोर्ट के चीफ जस्टिस बी आर गवई ,जस्टिस अमानुद्दीन अहसानुल्लाह, जस्टिस विक्रम नाथ,जस्टिस एम एम सुन्द्रेश, जस्टिस संजय करोल, जस्टिस प्रशांत कुमार मिश्रा, जस्टिस के वी विश्वनाथन,जस्टिस संदीप मेहता,जस्टिस प्रसन्ना बाला चंद्रवाले विशेष रूप से मौजूद थे।इस अवसर पर चीफ जस्टिस बी आर गवई ने मंज़र भोपाली की कविताओं के संग्रह तवीज़ का विमोचन किया।चीफ जस्टिस ने मंज़र भोपाली के काव्य संग्रह तवीज़ का अध्ययन किया और उस में शामिल भारतीयता ,नदी,पर्वत,तीज तेहवार पर अपनी खुशी का इज़हार किया।इस खास अवसर पर मंज़र भोपाली को चीफ जस्टिस के द्वारा सम्मानित किया गया।

एम्स भोपाल में विश्व उच्च रक्तचाप दिवस पर जागरूकता अभियान का आयोजन

भोपाल। एम्स भोपाल के कार्यपालक निदेशक प्रो. (डॉ.) अजय सिंह के मार्गदर्शन में विश्व उच्च रक्तचाप दिवस के अवसर पर एक विशेष जनजागरूकता अभियान आयोजित किया गया। इस अवसर पर संस्थान के विशेषज्ञों ने युवाओं और आम नागरिकों को उच्च रक्तचाप (हाइपरटेंशन) के खतरे और इससे बचाव के उपायों की जानकारी दी। बाल रोग विभाग के विशेषज्ञ डॉ. गिरीश भट्ट ने बताया कि बच्चों में उच्च रक्तचाप कई बार बिना लक्षणों के विकसित होता है और साइलेंट किलर के रूप में कार्य करता है। उन्होंने भोपाल में किए गए एक अध्ययन का हवाला देते हुए बताया कि 60 किशोरों में से 26.7 प्रतिशत में एंड ऑर्गन डैमेज पाया गया, जो भविष्य में अचानक ऑर्गन फेलियर का कारण बन सकता है। यह तथ्य न केवल बच्चों में बीपी की बढ़ती प्रवृत्ति को दर्शाता है, बल्कि समय पर पहचान और उपचार की आवश्यकता को भी उजागर करता है। वहीं, डीन (अकादमिक) डॉ. रजनीश जोशी ने एक आईसीएमआर सहयोगी अध्ययन का उल्लेख किया, जो भोपाल के 16 क्षेत्रों में किया गया था।

जैसे अमेरिका ने ओसामा को मारा, भारत ने भी वही किया

ऑपरेशन सिंदूर पर बोले उपराष्ट्रपति धनखड़, जताई खुशी

नई दिल्ली (एजेंसी)। उपराष्ट्रपति जगदीप धनखड़ ने शनिवार को एक कार्यक्रम में भारत के ऑपरेशन 'सिंदूर' की तुलना अमेरिका द्वारा पाकिस्तान में ओसामा बिन लादेन को मार गिराने वाली कार्रवाई से की। उन्होंने कहा कि भारत ने जो किया, वह अब दुनिया की जानकारी में है और यह आतंकवाद के खिलाफ एक नया वैश्विक मानक स्थापित करता है। बिना ओसामा बिन लादेन का नाम लिए धनखड़ ने कहा, 11 सितंबर 2001 को अमेरिका में हुए आतंकी हमलों के बाद 2 मई 2011 को एक वैश्विक आतंकी को अमेरिका ने उसी देश में जाकर खत्म कर दिया, जिसने उसे पनाह दी थी। भारत ने भी वैसा ही किया है। उपराष्ट्रपति ने कहा कि ऑपरेशन सिंदूर के तहत भारत ने पहली बार अंतरराष्ट्रीय सीमा पार कर आतंकवादी ठिकानों पर इतनी गहराई तक हमला किया है। यह हमला जैश-ए-मोहम्मद और लश्कर-ए-तैयबा के मजबूत गढ़ों पर किया गया। उन्होंने कहा कि ये हमले इतने सटीक थे कि केवल आतंकवादी ही मारे गए, आम नागरिकों को कोई नुकसान नहीं हुआ। धनखड़ ने कहा कि पहलगाम आतंकी हमले के बाद प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने बिहार से वैश्विक समुदाय को सख्त संदेश दिया था। उन्होंने कहा, वो शब्द केवल भाषण नहीं थे, अब दुनिया समझ चुकी है कि भारत अब आतंक के खिलाफ बर्दाश्त नहीं करेगा। उपराष्ट्रपति ने कहा, भारत ने आतंकवाद को खत्म करने के लिए कदम उठाए हैं, लेकिन हमेशा शांति की भावना को बनाए रखा है। यह कार्रवाई केवल

प्रतिशोध नहीं, बल्कि आतंकवाद की जड़ों पर चोट है। उन्होंने कहा कि ऑपरेशन सिंदूर को दुनिया 'सबसे गहरी सीमा पार कार्रवाई' के रूप में देख रही है और भारत ने यह साबित कर दिया है कि वह न सिर्फ अपने नागरिकों की रक्षा करेगा बल्कि आतंक के खिलाफ वैश्विक लड़ाई में भी अगुवा रहेगा। ऑपरेशन सिंदूर 6-7 मई की रात 01.05 से 01.30 बजे के बीच भारतीय सशस्त्र बलों द्वारा किया गया एक सैन्य अभियान था। इसने पाकिस्तान और पाकिस्तान अधिकृत जम्मू-कश्मीर (पीओजेके) में आतंकी ढांचे को निशाना बनाया। रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह के अनुसार, इस ऑपरेशन में 100 से अधिक आतंकवादी मारे गए, जिनमें जैश-ए-मोहम्मद का नेता अब्दुल रऊफ अजहर भी शामिल था, जो 1999 के आईसी-814 अपहरण और अमेरिकी पत्रकार डैनियल पर्ल की हत्या में शामिल था।

हरियाणा के लांसनायक को अंतिम विदाई, छतों-दीवारों पर चढ़ी भीड़

● 5 वर्षीय बेटे ने सैल्यूट कर दी मुखाग्नि, सेना बोली-ऑपरेशन में शहीद हुए

चरखी दादरी (एजेंसी)। हरियाणा के चरखी दादरी के शहीद लांसनायक मनोज फोगाट को शनिवार को अंतिम विदाई दी गई। पैतृक गांव समसपुर में शनिवार सुबह 11 बजे उनका सैन्य

सम्मान के साथ अंतिम संस्कार किया गया। उनके 5 साल के बेटे प्रिंस ने सैल्यूट कर पिता को मुखाग्नि दी। वह पंजाब के कपूरथला में 15 मई को सिर में गोली लगने से शहीद हो गए थे। उनके 2 बच्चे हैं, जिनमें बेटी दीक्षा (8) और बेटा प्रिंस (5) हैं। वह 4 मई को ही बेटे प्रिंस का बर्थडे मनाकर ड्यूटी पर लौटे थे। शनिवार सुबह उनकी पार्थिव देह के हरियाणा पहुंचते ही युवाओं की भारी भीड़ ने बाइक और पैदल रैली निकाली। शहीद की पार्थिव देह के आगे चलते हुए उन्होंने 'भारत माता की जय', 'वंदेमातरम' और 'शहीद मनोज फोगाट अमर रहे' के नारे लगाए। इस दौरान इतनी भीड़ जमा हो गई कि गांव के श्मशान घाट की जगह छोटी पड़ गई। जिसके बाद लोग शहीद को अंतिम विदाई देने के लिए श्मशान घाट की दीवारों और आसपास के घरों की छतों पर चढ़ गए। उनकी पार्थिव देह घर पहुंचने पर पत्नी रेखा और बेटा-बेटी को अंतिम दर्शन कराए गए।

इस दौरान मां संतोष ने कहा कि उन्हें देश के लिए शहादत देने वाले अपने बेटे पर गर्व है। पत्नी रेखा भी दोनों बच्चों को संभालते हुए रोती-बिलखती रहीं। शहीद को अंतिम विदाई देने के लिए हरियाणा सरकार की सिंचाई मंत्री श्रुति चौधरी, भिवानी-महेंद्रगढ़ से सांसद धर्मबीर सिंह और दादरी से विधायक सुनील सांगवान भी पहुंचे।

नेपाल के रास्ते बिहार में घुसने की फिराक में आतंकी

● इंडो-नेपाल बॉर्डर पर हाई अलर्ट

किशनगंज/सुपौल (एजेंसी)। भारत-पाक तनाव के बीच खुफिया विभाग की ओर से आतंकी घुसपैठ का अलर्ट जारी किया गया है। नेपाल के रास्ते बिहार में आतंकी घुसपैठ की कोशिश में हैं। खुफिया एजेंसियों के अनुसार, बांग्लादेश और पाकिस्तान से जुड़े 10 से ज्यादा आतंकी किशनगंज के ठाकुरगंज के रास्ते बिहार में घुसने की फिराक में हैं। यह संदिग्ध आतंकी ग्रुप बांग्लादेश के जमात-उल-मुजाहिदीन, हरकत-उल जिहाद अल-इस्लामी और बांग्लादेश जमात-ए-इस्लामी जैसे कट्टरपंथी संगठनों से जुड़े बताए जा रहे हैं। आतंकी घुसपैठ का इनपुट मिलने के बाद बिहार के सीमावर्ती जिलों में चौकसी बढ़ा दी गई हैं। सशस्त्र सीमा बल और बिहार पुलिस की संयुक्त टीम ने किशनगंज, सुपौल, किशनगंज, अररिया और सीतामढ़ी में गश्त बढ़ा दी है। वीरपुर, निर्मली और कोसी नदी के दियारा क्षेत्रों में गश्त तेज कर दी गई है। सीमावर्ती क्षेत्र में सुरक्षा बलों की चौकियां अलर्ट पर हैं।

● भारत अकेला है...

ऑपरेशन सिंदूर के बाद दिल्ली के साथ नहीं खड़ा हुआ कोई दोस्त

वैश्विक चुप्पी ने भारत सरकार को दिया है एक बहुत कड़वा सबक

रूसी राष्ट्रपति ने हत्या की निंदा तो की, लेकिन पाकिस्तान पर नहीं बोले

नई दिल्ली (एजेंसी)। पहलगाम आतंकी हमले के बाद भारत के ऑपरेशन सिंदूर पर दुनिया की चुप्पी कई सवाल खड़े कर रही है। खासकर उस वक्त, जब अमेरिका से लेकर यूरोपीय देश और ग्लोबल साउथ तक दिल्ली का दोस्त होने का दावा करते हैं। तो क्या ऑपरेशन सिंदूर ने वक्त रहते भारत को कड़वा सबक सिखाया है कि जियो-पॉलिटिक्स में आप ये उम्मीद नहीं कर सकते हैं कि संकट की घड़ी में आपके साथ कोई खड़ा हो। ऑपरेशन सिंदूर के दौरान अमेरिका से लेकर फ्रांस, ब्रिटेन, रूस या जापान, जिनके साथ भारत के काफी अच्छे संबंध हैं, उन्होंने चुप्पी साध ली। उन्होंने आतंक के खिलाफ भारत के ऑपरेशन का विरोध नहीं

किया, इसे ही सबसे बड़ी उपलब्धि माना जा सकता है। भारत के राष्ट्रीय सुरक्षा विश्लेषक नितिन ए गोखले ने कहा कि पहलगाम आतंकी हमले और ऑपरेशन सिंदूर के बाद भारत ने युद्ध, कूटनीति और नैरेटिव तय करने में खुद को अकेला पाया है। गोखले ने कहा कि आगे बढ़ने का एक ही रास्ता है, भारत को एक मजबूत आर्थिक और सैन्य शक्ति बनना होगा। गोखले का कहना है कि किसी भी बड़ी शक्ति ने, चाहे वो अमेरिका हो, रूस हो, ऑस्ट्रेलिया हो या क्वाड का एक और सदस्य जापान हो, किसी भी बड़ी महाशक्ति ने स्पष्ट समर्थन नहीं दिखाया। आतंकी हमले के बाद रूसी राष्ट्रपति ने 26 पर्यटकों की हत्या की निंदा तो की लेकिन पाकिस्तान का नाम तक नहीं लिया।

भस्म आरती दर्शन

भगवान महाकाल का त्रिनेत्र त्रिपुण्ड, भांग, चन्दन, ड्रायफ्रूट और पुष्प अर्पित कर श्रृंगार

उज्जैन (एजेंसी)। विश्व प्रसिद्ध श्री महाकालेश्वर मंदिर में शनिवार तड़के भस्म आरती के दौरान मंदिर के कपाट खोले गए। सभा

मंडप में वीरभद्र जी के कान में स्वस्ति वाचन कर घंटी बजाकर भगवान से आज्ञा लेकर सभा मंडप वाले चांदी के पट खोला गया। गर्भगृह के पट खोलकर पुजारी भगवान का श्रृंगार उतार कर पंचामृत पूजन के बाद कपूर आरती की। जटाधारी महाकालेश्वर भगवान को रजत चंद्र मुकुट और रुद्राक्ष की माला अर्पित कर श्रृंगार किया गया। त्रिनेत्र धारी भगवान महाकाल को चन्दन अर्पित किया, नंदी जी का स्नान,ध्यान, पूजन किया गया। जल से भगवान महाकाल का अभिषेक करने के पश्चात दूध, दही, घी, शक्कर, शहद, फलों के रस से बने पंचामृत से पूजन किया गया। भगवान महाकाल को रजत चंद्र त्रिशूल मुकुट भांग चन्दन ड्रायफ्रूट और भस्म चढ़ाई गई, शेषनाग का रजत मुकुट रजत की मुण्डमाल और रुद्राक्ष की माला के साथ-साथ भगवान महाकाल ने सुगन्धित पुष्प से बनी फूलों की माला धारण की। फल और मिष्ठान का भोग लगाया। झांझ मंजीरे डमरू के साथ भगवान महाकाल की भस्म आरती की गई। भस्म आरती में बड़ी संख्या में पहुंचे श्रद्धालुओं ने बाबा महाकाल का आशीर्वाद लिया। महा निर्वाणी अखाड़े की ओर से भगवान महाकाल को भस्म अर्पित की गई। मान्यता है की भस्म अर्पित करने के बाद भगवान निराकार से साकार रूप में दर्शन देते है।

पत्नी ने पूछा, फोन पर किससे बात कर रहे हो

पति ने कर दी पिटाई, केस दर्ज, बाणगंगा में बहन के मंगेतर के खिलाफ शिकायत

इंदौर (एजेंसी)। फोन पर किससे बात कर रहे हो ये बात पति से पूछना पत्नी को भारी पड़ गया। पति ने पत्नी के साथ गाली-गलौज करते हुए मारपीट कर दी। घटना के बाद महिला ने अपने पति के खिलाफ थाने में शिकायत की। पुलिस ने मामले में केस दर्ज कर लिया है। मामला सदर बाजार थाना क्षेत्र का है। पुलिस के मुताबिक इकबाल कॉलोनी निवासी मुस्कान शेख की शिकायत पर उसके पति मो.सईद अब्बासी के खिलाफ केस दर्ज किया है। महिला ने पुलिस को बताया कि वह घर पर मुंह धो रही थी तभी पति फोन पर बात कर रहे थे, तो मैंने पूछा किससे बात कर रहे हो इस पर पति ने मेरे साथ गाली-गलौज शुरू कर दी। मना करने पर पति ने मेरे साथ मारपीट की। विवाद होता देख परिवार और आसपास के लोग जमा हो गए। सभी ने बीच-बचाव किया। पुलिस मामले में जांच कर रही है। मंगेतर के खिलाफ की शिकायत- बाणगंगा थाना क्षेत्र में ग्राम भौरासला में आकांक्षा दुबे की शिकायत पर पुलिस ने आयुष शर्मा के खिलाफ केस दर्ज किया है। आकांक्षा ने पुलिस को बताया कि उसकी छोटी बहन श्रद्धा के साथ उनका पारिवारिक बात को लेकर कहासुनी हो गई थी। इस बात को लेकर श्रद्धा मेरे पिता की कार लेकर बिना बताए मंगेतर आयुष के पास चली गई। उसी दिन आयुष घर आया और गाली-गलौज करने लगा। उसने जान से मारने की धमकी भी दी। जिसके बाद महिला थाने पहुंची और केस दर्ज कराया।

इंदौर मेट्रो- टीसीएस से रेडिसन तक ट्रायल रन पर फोकस

प्रभारी एमडी बोले- गांधी नगर से टीसीएस के बीच कमर्शियल रन की तैयारियां रखें

इंदौर (एजेंसी)। गांधी नगर से टीसीएस के बीच मेट्रो के कमर्शियल रन की तैयारियां पूरी रखें। इसके लिए तैयार स्टेशन की सफाई और सुरक्षा मुस्तैदी से की जाए। अब टीसीएस से रेडिसन-विजयनगर तक चल रहे ट्रैक व स्टेशन के कामों में तेजी लाएं। हमारा 11 किमी के इस कॉरिडोर पर भी जल्द ही मेट्रो चलाने का लक्ष्य है। मेट्रो का 17 किमी का एलिवेटेड ट्रैक तैयार है। इस पर ट्रॉली रन भी हो चुका है। अंडरग्राउंड के लिए भी काम में तेजी लाएं। चौबीस घंटे काम करने की जरूरत है। यह निर्देश शुक्रवार को प्रभारी एमडी मेट्रो रेल कॉर्पोरेशन संकेत भोंडवे ने दिए। उन्होंने एलिवेटेड ट्रैक और कमर्शियल रन के लिए तैयार प्रायोरिटी कॉरिडोर का निरीक्षण किया और कार्यों की समीक्षा की। इस दौरान भोंडवे ट्रैक, स्टेशन व डिपो तीनों जगह पहुंचे। प्रायोरिटी कॉरिडोर, एससी 3 स्टेशन से गांधीनगर तक मेट्रो में यात्रा भी की। अधिकारियों को कहा, कमर्शियल रन के दौरान किसी तरह की असुविधा नहीं होनी चाहिए। मेट्रो स्टेशनों में आमजन से संबंधित सुविधाओं जैसे एंट्री-एग्जिट पॉइंट्स, टिकट काउंटर, सूचना प्रदर्शन प्रणाली, मेट्रो ट्रेन मे आपातकालीन द्वार, बटन इत्यादि के साथ-2 स्टेशन स्थल पर साफ-सफाई और सुरक्षा का विशेष ध्यान रखें। उन्होंने कहा, हमारी तैयारी पूरी होनी चाहिए, जिससे सरकार से किसी भी समय संकेत मिलने पर हम कमर्शियल रन शुरू कर सकें।

ऑपरेशन सिंदूर के वीरों के नाम होगा भवन

इंदौर/महू (एजेंसी)। नगर निगम पोलोग्राउंड अहिल्या आश्रम के समीप स्थित जिस भूमि पर भारत वन बनाने जा रहा था, वहां अब सेना ऑपरेशन सिंदूर के वीरों के नाम पर वंदे भारत भवन बनाने की तैयारी कर रही है। इसमें सैनिक परिवारों को ईसीएचएस पॉली क्लिनिक, कैंटीन काउंटर सहित अन्य सुविधाएं उपलब्ध कराने की बात कही जा रही है। दूसरी ओर प्रशासन का कहना है कि जमीन सरकारी है और मास्टर प्लान में ग्रीन बेल्ट के नाम पर दर्ज है। 5 जून को पर्यावरण दिवस पर सेना जनभागीदारी से यहां सघन पौधारोपण की तैयारी भी कर रही है। सैन्य अफसरों का दावा है कि मौजूदा फॉरेस्ट स्वरूप को बरकरार रखते हुए काम किया जाएगा। गुरुवार को सैन्य अधिकारियों ने यहां का दौरा कर सफाई कराई और फेंसिंग भी ठीक की। सेना के अनुसार यह आर्मी स्टॉक यार्ड भूमि है।

पॉलिक्लिनिक व कैंटीन भी बनाएंगे- गुरुवार को भारतीय सेना के मध्यभारत एरिया के जीओसी लेफ्टनेंट जनरल पीएस शेखावत, पीपीएसएम, वीएसएम, एसएम के साथ पहुंचे थे। स्टेशन कमांडर ब्रिगेडियर अतुल भाटिया एसएम के साथ दौरा किया।

पीएम मोदी की आंख में बांधी काली पट्टी

कांग्रेस ने किया शाह और देवड़ा के बयान के विरोध में प्रदर्शन

इंदौर (एजेंसी)। इंदौर कांग्रेस ने मध्य प्रदेश के कैबिनेट मंत्री विजय शाह और डिप्टी सीएम जगदीश देवड़ा द्वारा सेना पर की गई टिप्पणी के विरोध में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के पोस्टर के मुंह पर ताला लगाकर और आंखों पर काली पट्टी बांधकर प्रदर्शन किया। बता दें कि प्रदेश के कैबिनेट मंत्री ने कर्नल सोफिया को आतंकवादियों की बहन बताया था वहीं डिप्टी सीएम ने कल सेना को लेकर एक बयान दिया था जिसे कांग्रेस ने सेना का अपमान बताया है। सेवादल कांग्रेस के शहर कार्यवाहक अध्यक्ष विवेक खंडेलवाल और सूचना प्रकोष्ठ के गिरीश जोशी ने बताया कि मध्यप्रदेश के मंत्रियों में सेना के खिलाफ अनर्गल टिप्पणी करने की होड़ लगी है, पहले विजय शाह ने सोफिया कुरैशी के खिलाफ अत्यंत निंदनीय टिप्पणी की। उसके बाद प्रदेश के डिप्टी सीएम ने सेना को प्रधानमंत्री के चरणों में नत मस्तक बताया। इतना सब होने के बाद भी प्रधानमंत्री का कुछ नहीं बोलना बताता है कि प्रधानमंत्री आज के धृतराष्ट्र बन गए हैं। ना कुछ देख रहे हैं ना कुछ बोल रहे हैं, इसे लेकर आज इंदौर में कांग्रेस ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की आंखों पर पट्टी बांधी और मुंह पर ताला लगा कर विरोध प्रदर्शन किया है। प्रदर्शन में पोस्टर पर ताला लगा कर और पट्टी बांध कर हमने बताया कि उनकी पार्टी के कौरव कितना भी गलत करें पीएम मोदी उन्हें कुछ नहीं बोलेंगे और ना ही उनके द्वारा किए जा रहे गलत कामों को देखेंगे।

विजय शाह, देवड़ा और कुलस्ते ने दिए विवादित बयान

उल्लेखनीय है कि मंत्री विजय शाह ने कर्नल सोफिया कुरैशी को लेकर आपत्तिजनक बयान दिया था। उन्होंने महू में आयोजित एक कार्यक्रम में कहा था कि उन्होंने (आतंकियों ने) कपड़े उतार-उतार के हमारे हिंदुओं को मारा और मोदी जी ने उनकी बहन को उनकी ऐसी की तैसी करने उनके घर भेजा। अब मोदी जी कपड़े तो उतार नहीं सकते, इसलिए उनकी समाज की बहन को भेजा कि तुमने हमारी बहनों को विधवा किया है तो तुम्हारे समाज की बहन आकर तुम्हें नंगा करके छोड़ेगी। दूसरा बयान डिप्टी सीएम जगदीश देवड़ा का आया जिसमें उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री जी को धन्यवाद देना चाहेंगे।...और पूरा देश, देश की वो सेना, वो सैनिक...उनके चरणों में नतमस्तक हैं। उनके चरणों में पूरा देश नतमस्तक है। उन्होंने जो जवाब दिया है, उसकी जितनी सराहना की जाए, जितना कहा जाए, एक बार उनके लिए जोरदार तालियां बजाकर स्वागत करिए। ऐसे ही तीसरा बयान सांसद फग्गन सिंह कुलस्ते का सामने आया है। वे आतंकियों को हमारा कह बैठे। कुलस्ते ने कहा- ऑपरेशन सिंदूर पर मोदी जी ने जवाब दिया। इस देश के लिए और समाज के लिए, उसकी पूरी क्षमता से, सेना की, हम उसकी बहुत सराहना करते हैं।

इंदौर कलेक्ट्रेट पर हिंदू संगठन के कार्यकर्ताओं का प्रदर्शन

लव जिहाद के आरोपियों के खिलाफ कड़ी कार्रवाई और सख्त सजा देने की मांग

इंदौर (एजेंसी)। भोपाल सहित प्रदेशभर में बड़े स्तर पर चल रहे लव जिहाद के विरोध में शुक्रवार को सकल हिंदू समाज से जुड़े संगठनों ने इंदौर कलेक्टर कार्यालय पर ज्ञापन सौंपा। सभी ने लव जिहाद में शामिल लोगों पर पुलिस द्वारा कड़ी से कड़ी कार्रवाई करने और सख्त सजा देने की मांग की। कलेक्टर कार्यालय पर हिंदूवादी संगठनों और समाज के अन्य वर्गों के प्रतिनिधि एकत्रित हुए। संगठन के संजय भाटिया ने बताया कि मुख्यमंत्री के नाम दिए गए इस ज्ञापन में पिछले दिनों भोपाल में बड़े पैमाने पर लव जिहाद का मामला सामने आया है। साथ ही उज्जैन, इंदौर, रीवा, सागर, दमोह और मुरैना में भी इस तरह की घटनाएं हुई हैं। ऐसे में प्रदेश में इसके खिलाफ व्यापक अभियान चलाने की आवश्यकता महसूस हो रही है। संगठन के लोगों ने ज्ञापन में लव जिहाद के मामले में एनआईए जैसी एजेंसी को इस प्रकार के मामले सौंपने की मांग की है, ताकि इस अंतरराज्यीय संगठित अपराध के मामले उजागर हो सके। वहीं अपराध में शामिल और सहयोग करने वालों को भी अपराधी बनाया जाए, वहीं शासकीय और अशासकीय विभागों में कार्यरत कर्मचारियों के पुलिस वेरिफिकेशन भी हो। सरकार ने ऐसे व्यक्तियों को फांसी जैसा कड़ा दंड देने की घोषणा की थी। इसको लेकर प्रकरण में पर्याप्त साक्ष्य जोड़े जाएं, जिससे इस प्रकार के लोग छूट नहीं पाएं। इसके साथ ही 9 बिन्दुओं पर कार्रवाई की मांग मुख्यमंत्री से की गई है, ताकि प्रदेश में तेजी से पनपते लव जिहाद के मामले रोके जा सके।

पांच दिनों से दिन का तापमान 36 डिग्री पर

हवा में नमी की वजह से उमस ने किया परेशान, तेज हवा और बारिश का अनुमान

इंदौर (एजेंसी)। इन दिनों मौसम एक जैसा है। पिछले पांच दिनों से दिन का तापमान 36 डिग्री से ज्यादा रिकॉर्ड हो रहा है। इसके साथ ही काफी उमस महसूस हो रही है जिससे लोग परेशान हैं। शनिवार को भी ऐसा ही मौसम रहा। इस दौरान मौसम में 42 प्रतिशत नमी दर्ज की गई, वहीं हवा की

गति 6 किमी प्रति घंटा थी। शनिवार सुबह से धूप और बादलों का दौर चल रहा है। मौसम वैज्ञानिकों ने आज तेज हवा और बारिश का अनुमान जताया है। शुक्रवार को दिन का तापमान सामान्य से 4 डिग्री कम होकर 36.9 डिग्री सेल्सियस दर्ज किया गया। सुबह 8.30 बजे 27.4 डिग्री तापमान था, जो दोपहर में अधिकतम 36.9 पर और शाम साढ़े 5 बजे 36.4 डिग्री सेल्सियस दर्ज हुआ। इन दिनों तापमान जरूर कम है, लेकिन उमस ने बेहाल कर रखा है। शुक्रवार को मौसम में नमी 42 प्रतिशत दर्ज की गई, वहीं हवा की गति 6 किमी प्रति घंटा थी। मौसम विभाग ने बारिश और आंधी की संभावना जताई थी, लेकिन कुछ क्षेत्रों में शाम तक बूंदाबादी ही हुई। उधर, गुरुवार रात का तापमान 26 (+1) डिग्री सेल्सियस था। इसमें हल्का उतार रहा और 25.2 (0) डिग्री सेल्सियस रिकॉर्ड किया गया। सीनियर मौसम वैज्ञानिक डॉ. दिव्या ई. सुरेंद्रन के मुताबिक प्रदेश में 3 साइक्लोनिक सर्कुलेशन और एक टर्फ की एक्टिविटी है। इस वजह से बारिश और आंधी चल रही है। बारिश के साथ गर्मी का असर भी देखने को मिलेगा। इंदौर में भी आज इसका असर तेज हवा और बारिश के रूप में देखने को मिल सकता है।

पिता का दर्द-एक बार बताती तो उस पर कर्ज है

बेटी के सुसाइड के बाद रोते हुए कहा- पत्नी अस्पताल में, क्या जवाब दूंगा

इंदौर (एजेंसी)। मेरी बेटी बेटे से कम नहीं थी। पत्नी अस्पताल में भर्ती है, उसे क्या जवाब दूंगा। रात में ही बेटी से मेरी बात हुई थी। उसने किसी तरह के तनाव की बात नहीं की। अगर कहती तो उसका सब कर्ज चुका देता। एक बार कहती तो कि उस पर कर्ज है। यह दर्द है बैंक की सेल्स एग्जीक्यूटिव शालू सिंह के पिता का, जिसने इंदौर की सिलीकॉन सिटी में हाथ की नस काटकर सुसाइड कर लिया। पिता शुक्रवार को एमवाय अस्पताल में उसका शव लेने पहुंचे। यहां पोस्टमॉर्टम के दौरान रोते हुए उन्होंने अपनी दर्द बयां किया। राऊ पुलिस ने शुक्रवार को शालू का शव उसके पिता परमात्मा सिंह को सौंप दिया। वह शव को लेकर भोपाल चले गए। उन्होंने बताया कि उनकी तीन बेटियां हैं। दो बेटी पत्नी के साथ भोपाल में रहती हैं। शालू इंदौर में रहती थी। परमात्मा सिंह अहमदाबाद में एक निजी कंपनी में मैनेजर है। एक बेटी निजी कंपनी में एचआर मैनेजर है। वहीं, तीसरी बेटी पढ़ाई कर रही है।

सुसाइड वाली रात ही बेटी से बात की थी- परमात्मा सिंह ने बताया, हर रात को मैं एक

शालू सिंह

बार बेटियों से बात करके उनका हालचाल लेता हूं। इसके बाद ही सोता हूं। बुधवार को भी इंदौर में बेटी शालू ने बात की। वह बैंक से आ गई थी और खाना भी खा लिया था। उसकी बातों से नहीं लगा कि वह तनाव में है। शालू का सपना था कि खुद का घर हो। भोपाल में तीनों बेटियों के लिए मैं घर भी बनवा रहा था, लेकिन उसके पहले ही उसने इस तरह का कदम उठा लिया। परिवार सभी तरह से सक्षम है, फिर भी उस पर 6 लाख से ज्यादा का कर्ज हो गया था।

बैंक अधिकारी को दी थी कर्ज की जानकारी

शालू के बैंक के अधिकारी ने बताया कि एक बार बातचीत में शालू ने बताया था कि उस पर ऑनलाइन एप से कर्ज ज्यादा हो गया है। वह उसे चुका नहीं पा रही है। तब उसके सीनियर ने भी उसे समझाया था कि सबकुछ ठीक हो जाएगा। उन्होंने शालू को परिवार से इस बारे में बात करने के लिए कहा था।

फरवरी में नहीं हो पाई थी सगाई

शालू के पिता ने बताया, बेटी करीब चार साल से अमन मेहरा नाम के लड़के के साथ रिलेशन में थी। अमन और उसने शादी की इच्छा जताई। पहले हम राजी नहीं थे, लेकिन बाद में हां कर दी। फरवरी में उन्होंने सगाई करने की बात की। तब अमन ने काफी कुछ चीजों की डिमांड की। यह बात शालू को भी ठीक नहीं लगी। इसके बाद दोनों ने बात बंद कर दी। अमन आईटी कंपनी दिल्ली में कार्यरत है। इधर, पुलिस के मुताबिक शालू के मोबाइल से कुछ जानकारी सामने आ सकती है। अभी उसमें लॉक लगा है, जिसे जांच के लिए भेजा जाएगा।

इंदौर रेलवे स्टेशन की डिजाइन अभी तक नहीं हुई फाइनल

2028 सिंहस्थ के पहले पूरा करने का लक्ष्य, 450 करोड़ में होगा रि-डेवलपमेंट

इंदौर (एजेंसी)। साल 2028 में होने वाले सिंहस्थ के पहले इंदौर रेलवे स्टेशन का रि-डेवलपमेंट का कार्य पूरा होना मुश्किल लग रहा है, क्योंकि अभी तक इसकी डिजाइन फाइनल नहीं हुई है। जानकार बताते हैं कि डिजाइन को लेकर बैठकें हो चुकी हैं, लेकिन यह अभी तक फाइनल क्यों नहीं हुआ इसकी वजह समझ नहीं आ रही है। बता दें कि इस प्रोजेक्ट का फरवरी 2024 में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने वर्चुअली भूमिपूजन किया था। करीब 450 करोड़ की लागत से तैयार होने वाले इस रेलवे स्टेशन का काम सिंहस्थ के पहले (साल 2027 तक) पूरा करने का लक्ष्य है। रेलवे ने दिसंबर 2024 में ही गुजरात की निर्माण एजेंसी को काम सौंप दिया था, उसने अब तक फाइनल डिजाइन ही स्वीकृत नहीं कराई है। जिससे रि-डेवलपमेंट का काम 5 माह बाद भी शुरू नहीं हो पाया है। अगले महीने से

बारिश आ जाएगी और तीन माह काम शुरू करने में ही परेशानी आएगी। इस कारण दो साल में रेलवे स्टेशन का रि-डेवलपमेंट का काम पूरा होना मुश्किल नजर आ रहा है। सांसद शंकर लालवानी ने बताया कि नए स्टेशन की डिजाइन पर पिछले दिनों हुई बैठक में सहमति बनी थी। इसके बाद इसे फाइनल करने के लिए मुख्यालय भेजा था। संभवतः इसे फाइनल कर दिया गया है, लेकिन फाइनल डिजाइन अभी तक मिली नहीं है। इसके जल्द ही मिलने की उम्मीद है। नया निर्माण नई डिजाइन के आधार पर ही टुकड़ों-टुकड़ों में किया जाएगा, ताकि ट्रेनों का संचालन और यात्रियों को कोई परेशानी न हो।

कंपनी ने टेंडर होने के बाद यह किया

कंपनी ने यहां पर तैयारी शुरू कर ली है। मिट्टी का परीक्षण किया जा चुका है पर डिजाइन फाइनल न होने के कारण काम शुरू नहीं हो पा रहा है। निर्माण एजेंसी को सबसे पहले रेलवे स्टेशन की अंदरूनी डिजाइन तैयार करनी है। इसमें स्टेशन भवन, पैदल पुल, सर्कुलेटिंग एरिया, पार्किंग आदि का फोटो के साथ मेजरमेंट लिया जाना है।

दामाद के साथ बाइक पर जाते वक्त हुआ एक्सीडेंट, मौत

बेटी-दामाद से मिलने इंदौर आई थी शाजापुर की महिला

इंदौर (एजेंसी)। इंदौर के चंदन नगर थाना क्षेत्र में दामाद के साथ बाइक पर जा रही महिला की एक्सीडेंट में मौत हो गई। घटना के बाद शव को पीएम के लिए जिला अस्पताल भेजा गया। जहां पुलिस उसका पीएम करा रही है।झ चंदन नगर पुलिस के मुताबिक मृतिका का नाम 80 वर्षीय मेराज पति याकूब निवासी शाजापुर बताया जा रहा है। वह अपनी बेटी-दामाद से मिलने के लिए इंदौर आई थी। उनका दामाद शाहरुख खान ग्रीन पार्क कॉलोनी में रहता है। शुक्रवार की रात को वह अपने दामाद के साथ खरीददारी कर लौट रही थी तभी डंपर चालक ने उनकी बाइक को पीछे से टक्कर मार दी। हादसे में महिला की मौके पर ही मौत हो गई। जबकि उनका दामाद घायल हो गया। परिजन बिलाल खान ने बताया कि महिला इंदौर में अपने बेटी-दामाद से मिलने आई थी। मार्केट से लौटते वक्त ये हादसा हो गया था। हादसा सिरपुर तालाब के पास हुआ है। एक्सीडेंट के बाद लोगों ने फोन किया तो घटना की जानकारी मिली। शाहरुख का अस्पताल में इलाज चल रहा है। एक्सीडेंट के बाद मौके पर लोगों की भीड़ जमा हो गई थी।

करंट के बाद खंभे से गिरते बिजलीकर्मी का वीडियो

लोगों ने पकड़ने की कोशिश की लेकिन जमीन पर गिरा

भीड़ ने चक्काजाम किया

रतलाम (एजेंसी)। रतलाम में बिजली का फाल्ट सुधारने खंभे पर चढ़ा कर्मचारी करंट लगने से नीचे गिर गया। नीचे खड़े लोगों ने उसे जमीन पर गिरने से पहले पकड़कर बचाने के प्रयास किए। कर्मचारी को रतलाम में प्राइवेट हॉस्पिटल के आईसीयू में भर्ती कराया है। इसका वीडियो सामने आया है। घटना के बाद आक्रोशित ग्रामीणों बिना सुरक्षा इंतजाम काम कराने के विरोध में कंपनी के खिलाफ प्रदर्शन किया। सड़क पर जाम लगा दिया। घटना बिलपांक थाना के धानासुता गांव की है। घायल कर्मचारी के परिवार में चार नाबालिग बेटियां और पत्नी है।

करंट से बेहोश होकर ऊपर ही चिपक गया- आउटसोर्स कर्मचारी राकेश माली निवासी धानासुता सुबह करीब 10 बजे खंभे पर चढ़ा था। जैसे ही वह ऊपर पहुंचा अचानक तारों में करंट आ गया। करंट

लगते ही वह बेहोश होकर वहीं चिपक गया। वहां मौजूद ग्रामीणों ने देखा और गांव के एक अन्य लाइनमैन मुकेश मकवाना को फोन कर बिजली बंद करने को कहा। बिजली बंद होने के बाद फकीरचंद रजक, राकेश को उतारने खंभे पर चढ़ा। वह ऊपर पहुंचा ही था कि राकेश नीचे आ गिरा। जानकारी के मुताबिक लाइनमैन मंगलसिंह की साथ में ड्यूटी थी, लेकिन वो वहां नहीं था। मंगलसिंह ने ही परमिशन लेकर बिजली सप्लाई बंद कराई थी।

प्रदर्शनकारी बोले- बिजली किसने चालू की?

ग्रामीणों ने बिजली कंपनी के खिलाफ प्रदर्शन कर बड़नगर-खाचरौद रोड पर जाम लगा दिया। ग्रामीणों का कहना था कि जब कर्मचारी बिजली कंपनी से फॉल्ट सुधारने की परमिशन लेकर खंभे पर चढ़ा तो बिजली किसने चालू की। उसके खिलाफ कार्रवाई की जाए। कर्मचारी का इलाज कराते हुए आर्थिक सहायता दी जाए। मौके पर कार्यपालन यंत्री ग्रामीण पहुंचे। जांच का आश्वासन दिया। इधर, घायल से मिलने हॉस्पिटल में बिजली कंपनी अधीक्षण यंत्री बेंजामीन फ्रेंकलिन पहुंचे।

कर्मचारी को पहले दो बार लग चुका करंट

कर्मचारी राकेश को तीसरी बार करंट लगा है। गांव के संदीप राठौर, संजय पांचाल, नीलेश माली, अजय वर्मा ने बताया राकेश को पहली बार कमेड़ की ग्रिड पर करंट लगा था। दूसरी बार कमेड़ चौराहे पर लगे पोल पर कार्य के दौरान करंट लगा था। इसके बाद इलाज के बाद ठीक हुआ। शनिवार को तीसरी बार करंट लगा है।झ बिना सुरक्षा काम करवाने के विरोध में लोगों ने बिजली कंपनी के खिलाफ प्रदर्शन किया। बड़ी संख्या में मौजूद लोगों ने चक्काजाम भी कर दिया।

रिटर्न करंट आया, जांच कर रहे हैं

बिजली कंपनी के अधीक्षण यंत्री बेंजामीन फ्रेंकलिन ने बताया घटना की जांच की जा रही है। लाइनमैन मंगलसिंह साथ में था। इसने परमिट लिया था। अचानक रिटर्न करंट आया। करंट लगने से कर्मचारी राकेश पोल से नीचे गिर गए। मेरी उनसे बात हुई है। बातचीत कर रहे है। लाइनमैन मंगलसिंह को निलंबित कर रहे हे। संबंधित प्रभारी अधिकारी के खिलाफ भी कार्रवाई की जाएगी। पूर्व में सेफ्टी ड्रिल भी कराया।

अन्तराष्ट्रीय संग्रहालय दिवस

विजयदत्त श्रीधर
संस्थापक-संयोजक माधवराव सप्रे स्मृति समाचारपत्र संग्रहालय एवं शोध संस्थान, भोपाल

संग्रहालय मानवता के भूत-वर्तमान-भविष्य के संदर्भ सेतु

ऐसा परिसर जहाँ प्रवेश करते ही रहस्य-रोमांच के वातावरण की प्रतीति होने लगती है। जैसे-जैसे आगे बढ़ते हैं कभी आनंद का एहसास होता है। कभी विस्मय से आँखें खुली रह जाती हैं। कभी पुरखों के श्रमसाध्य और कष्टसाध्य कला-कौशल पर हृदय न्योछावर होने लगता है। कभी टीस और करुणा से मन भीग जाता है। कभी गर्व और गौरव से माथा उन्नत और छाती चौड़ी होने लगती है। एक ही परिसर में ऐसे विविधवर्णी अनुभव और अनुभूतियाँ किसी चमत्कार से कम तो नहीं! बात हो रही है संग्रहालयों की। आचार्य डा. उमा त्रिपाठी ने कैसी सटीक उपमा दी है,

''संग्रहालय में आकर इतिहास से रू-ब-रू हुआ जा सकता है।''

अंतरराष्ट्रीय संग्रहालय परिषद (आइकाम) ने संग्रहालय की परिभाषा इस प्रकार की है-

''संग्रहालय लाभ-हानि के सोच से परे समाज की सेवा में संलग्न स्थायी संस्थान होते हैं। ये समाज के विकास के लिए कार्य करते हैं। जनसाधारण के लिए खुले रहते हैं। संग्रहालय मानव और उनके पर्यावास के साक्ष्य, विविध सामग्री का संकलन, संग्रहण और संरक्षण करते हैं। उन्हें प्रदर्शित करते हैं। शोध-अनुसंधान में सहायक बनते हैं। अध्ययन, शिक्षा और मनोरंजन का उद्देश्य पूरा करते हैं।''

अंतरराष्ट्रीय संग्रहालय परिषद ने सन 1977 में अंतरराष्ट्रीय संग्रहालय दिवस मनाने की शुरुआत की। प्रतिवर्ष 18 मई को विश्व संग्रहालय दिवस मनाया जाता है। प्रत्येक वर्ष के लिए कोई विषय विशेष चुना जाता है। उस पर विमर्श, बौद्धिक प्रतियोगिताएँ और प्रदर्शनी आदि के माध्यम से समाज को जाग्रत और शिक्षित किया जाता है। ये अवसर विभिन्न राष्ट्रों और समाजों के बीच सांस्कृतिक आदान-प्रदान और पारस्परिक समझ विकसित करने का काम करते हैं।

मनुष्य में जिज्ञासा का तत्व प्रबल होता है। उसकी रुचि अतीत का स्मरण करने में होती है। अतीत गौरवशाली हो तो उसके स्मृति चिह्नों से, स्मारकों से, कला-संस्कृति के प्रतीकों से, पोथियों से, यहाँ तक कि पुरातन कालचक्र के प्राणियों के ढाँचों से मोह और लगाव स्वाभाविक होता है। इसीलिए इन्हें अतीत के साक्ष्य, वर्तमान के अध्ययन और भविष्य के शिक्षण के लिए संजो कर रखा जाता है। उनका संरक्षण किया जाता है। दस्तावेजीकरण किया जाता है। यही प्रवृत्ति और प्रक्रिया संग्रहालयों की भूमिका और दायित्व का आधार रचती है।

इसे पहले पहल सांस्थानिक स्वरूप सत्रहवीं शताब्दी में मिला, जब अद्भुत सामग्रियों के संग्रह को संग्रहालय (म्युजियम) कहा गया। इन्हें अजायबघर भी कहा जाता था। इंग्लैण्ड में सन् 1675 में शुरुआत करने वाले जान ट्रेड्स केन्ट्स के संग्रह को सर्व साधारण के लिए खोला गया। पश्चात इसे ऑक्सफोर्ड स्थानान्तरित किया गया। दुनिया के इस सबसे पुराने संग्रहालय को 'एश्मोलियन म्युजियम ऑक्सफोर्ड' के नाम से जाना जाता है। तब से दुनियाभर में संग्रहालयों की स्थापना और विकास का सिलसिला चल रहा है। दुनिया के प्रमुख संग्रहालयों में पेरिस का लूवर संग्रहालय सबसे बड़ा माना जाता है। इसके संग्रह में विश्व प्रसिद्ध 'मोनालिसा' भी सम्मिलित है। न्यूयार्क का मेट्रोपालिटन कला संग्रहालय, इटली का वेटिकन संग्रहालय, लंदन का ब्रिटिश संग्रहालय, चीन का राष्ट्रीय संग्रहालय, जापान का टोक्यो राष्ट्रीय संग्रहालय, जर्मनी का मानव विज्ञान राष्ट्रीय संग्रहालय, ब्रिटेन के विक्टोरिया और अलबर्ट संग्रहालय, दक्षिण कोरिया का राष्ट्रीय संग्रहालय और अमेरिका का शिकागो कला संस्थान आदि प्रमुख हैं।

कोलकाता का भारतीय संग्रहालय भारत में सबसे बड़ा और पुराना है। राष्ट्रीय संग्रहालय नईदिल्ली, सालारजंग संग्रहालय हैदराबाद, छत्रपति शिवाजी महाराज वस्तु संग्रहालय मुंबई, सरकारी संग्रहालय चेन्नई, अलबर्ट हाल संग्रहालय जयपुर, राष्ट्रीय रेल संग्रहालय नईदिल्ली, केलिको म्युजियम ऑफ टेक्सटाइल्स अहमदाबाद, शंकर अंतरराष्ट्रीय गुड़िया संग्रहालय दिल्ली, नेपियर संग्रहालय तिरुवनंतपुरम्, एच.ए.एल.-हैरिटेज सेन्टर और एयरोस्पेस संग्रहालय बंगलुरु तथा राष्ट्रीय आधुनिक कला संग्रहालय बंगलुरु भारत के प्रमुख संग्रहालय हैं। ये सभी संग्रहालय वर्तमान पीढ़ी को उसके अतीत का ज्ञान कराते हुए वर्तमान से जोड़ रहे हैं। भविष्य की यात्रा का दिशा-संकेत कर रहे हैं। विविध विषयों के ज्ञान का भाण्डार संजोए हुए ये संग्रहालय परस्पर संस्कृति और परंपरा आदान-प्रदान और विमर्श से समूची दुनिया को लाभान्वित कर रहे हैं। यही उनका प्रदाय है, यही उनकी उपादेयता है और यही उनकी चिरकालिक महत्ता का आधार है।

अब बात करें देश के हृदय मध्यप्रदेश में बसे भोपाल की, जिसे आमतौर पर संग्रहालयों की नगरी कहा जाता है। भोपाल में राज्य संग्रहालय और राष्ट्रीय अभिलेखागार पहले से स्थापित रहे हैं। राज्य संग्रहालय मध्यप्रदेश के पुरातत्व की समृद्ध झाँकी प्रस्तुत करता है। राष्ट्रीय अभिलेखागार की भोपाल इकाई में स्वतंत्रता संग्राम और विशेष रूप से भोपाल रियासत से संबंधित दस्तावेज बड़ी संख्या में उपलब्ध हैं। राज्य संग्रहालय के साथ मध्यप्रदेश राज्य अभिलेखागार को भी तीन दशक पहले जोड़ दिया गया है। यहाँ ऐतिहासिक दस्तावेजों का विशाल संग्रह है। बिरला संग्रहालय अपनी प्रतिमाओं और अन्य संग्रहों के कारण पुरातात्विक महत्व रखता है।

इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मानव संग्रहालय भारत की जनजातीय विरासत और विभिन्न अंचलों की परंपरागत बसाहट का जीवंत चित्रण प्रस्तुत करता है। मानवशास्त्र (नृविज्ञान) के शोध-अध्ययन की दृष्टि से यह अत्यंत महत्वपूर्ण संस्थान है। अपनी सजग सक्रियता से नित-नवीन उपलब्धियाँ अर्जित कर रहा है। प्रकृति विज्ञान क्षेत्रीय संग्रहालय (रीजनल म्युजियम ऑफ नेचुरल हिस्ट्री) अपनी विशिष्टता के कारण भोपाल का उल्लेखनीय संस्थान है। आंचलिक विज्ञान केन्द्र विद्यार्थियों के लिए आकर्षण का केन्द्र है। खगोलीय घटनाओं के समय यहाँ जिज्ञासु युवाओं का जुटना विशेष अनुभव देता है। राष्ट्रीय दूरसंचार संग्रहालय देश में दूरसंचार के उद्भव और विकास की कहानी कहता है। भिन्न-भिन्न कालखण्डों के भाँति-भाँति के टेलीफोन इस संग्रहालय का आकर्षण हैं।

ज्ञानतीर्थ सप्रे संग्रहालय भोपाल में स्थित ऐसा महत्वपूर्ण शोध संस्थान है जिसका लाभ देश और विदेशों के शोधकर्ताओं, लेखकों, पत्रकारों और शिक्षाविदों को पिछले चार दशक से मिल रहा है। लगभग पाँच करोड़ पृष्ठों की दुर्लभ और महत्वपूर्ण संदर्भ सामग्री संजोने वाले माधवराव सप्रे स्मृति समाचारपत्र संग्रहालय एवं शोध संस्थान में पुस्तकालय सेवा के तीनों प्रारूप कार्यरत हैं। सन् 1984 से परंपरागत पुस्तकालय सेवा का लाभ जिज्ञासु पाठक और विद्यार्थी उठा रहे हैं। पिछले पाँच वर्षों से डिजिटल लाइब्रेरी संचालित है। भारतीय स्टेट बैंक की सामाजिक सेवा बैंकिंग के अंतर्गत सी.एस.आर. मद से उपलब्ध धनराशि से सप्रे संग्रहालय के 20,01,994 दुर्लभ दस्तावेजों और पुराने जर्जर पृष्ठों का डिजिटलीकरण हुआ है। डिजिटल लाइब्रेरी समृद्ध हुई है। इससे संदर्भ सामग्री की सुरक्षा और शोध-अध्ययन के लिए उपलब्धता सुनिश्चित हुई है। पिछले वर्ष से रामेश्वर दास गार्गव स्मृति ई-लाइब्रेरी भी विद्यार्थियों को सेवा प्रदान कर रही है। अपनी तरह के इस अनूठे और एकमेव संग्रहालय में 1,66,222 संदर्भ ग्रंथ और पुस्तकें, 26,476 शीर्षक समाचारपत्र और पत्रिकाएँ, 5000 हस्तलिखित पाण्डुलिपियाँ, पोथियाँ और अन्य दस्तावेजी प्रकाशन, 4,605 संदर्भ फाइलें, महत्वपूर्ण साहित्यकारों, पत्रकारों और शिक्षाविदों के 10,000 पत्र तथा 200 रेडियो, ग्रामोफोन, कैमरे, टेप रिकार्डर, फोन, टाइपराइटर आदि पुराने उपकरण संग्रहीत हैं। भारत की सभी भाषाएँ और पूरा भूगोल प्रतिनिधि रूप में यहाँ विद्यमान है। चार दशकों में सप्रे संग्रहालय की संचित संदर्भ सामग्री का लाभ उठाते हुए 1238 शोधार्थियों ने विश्वविद्यालयों से पीएच.डी. एवं डी.लिट्. की उपाधियाँ अर्जित की हैं।

स्वराज संस्थान संचालनालय के अंतर्गत डा. शंकरदयाल शर्मा स्वतंत्रता संग्राम संग्रहालय का पुस्तक संग्रह भी महत्वपूर्ण है। स्वाधीनता आंदोलन पर केन्द्रित मध्यप्रदेश की जिलेवार पुस्तकों का प्रकाशन कर स्वराज संस्थान ने दस्तावेजीकरण का कार्य किया है। दुष्यंत कुमार स्मारक पाण्डुलिपि संग्रहालय साहित्यकारों की पाण्डुलिपियों के संकलन और स्मृति चिह्नों के संग्रहण की जिम्मेदारी बखूबी निभा रहा है। नए भोपाल शहर की साहित्यिक गतिविधियों का यह केन्द्र है। भोपाल केन्द्रीय कारागृह में स्थापित आकार-गुड़ियाघर संग्रहालय में महिला बंदियों द्वारा बनाई गई भाँति-भाँति की गुड़ियाओं का संग्रह प्रदर्शित है।

ऐतिहासिक महत्व के संग्रहों की शृंखला में आकाशवाणी में संजोए गए संगीतकारों और साहित्यकारों के साक्षात्कारों के रिकार्ड और संगीत कार्यक्रमों की रिकार्डिंग भी उल्लेखनीय है और स्थायी महत्व की है। दूरदर्शन भी ऐसी रिकार्डिंग सहेज रहा है। इस रूप में महान सर्जकों की वाणी चिरकालिक धरोहर बन गई है।

भारत में संग्रहालय मुख्य रूप से सरकार द्वारा स्थापित और संचालित हैं। भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण द्वारा संरक्षित स्मारकों की संख्या बहुत बड़ी है। ये स्मारक इतिहास, संस्कृति और परंपरा के जीते-जागते साक्ष्य हैं। संग्रहालय भी इसी विशिष्ट भूमिका के कारण महत्व पाते हैं। विभिन्न न्यासों और सोसायटियों द्वारा भी संग्रहालयों का संचालन किया जाता है। जरूरी है कि समाज की सहभागिता संग्रहालयों के साथ बढ़े। अंततः संग्रहालय समाज की ही थाती हैं। नई पीढ़ी को संग्रहालयों से जोड़ने के लिए निरंतर अभियान चलते रहना चाहिए।

गहन अन्धकार में सकारात्मकता फैलाती कहानियां

पुस्तक समीक्षा

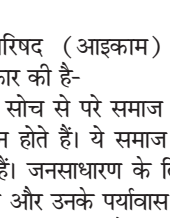

मनीषा मंजरी
समीक्षक

हिंदी साहित्य के अग्रणी लेखक, स्तंभकार, कवि और सुदूर एवं गूढ़ विचारों वाले व्यक्तित्व के धनी नृपेंद्र अभिषेक नृप जी अपनी पांचवी कृति के रूप में 'ज़िन्दगी की उजास' लेकर आये हैं। ज़िन्दगी की उजास उनकी पहली कहानी -संग्रह है, जिसमें संगृहीत कहानियों में उन्होंने ज़िन्दगी के विभिन्न रंग बिखेरे हैं। ये कहानियां काल्पनिक होते हुए भी समकालीन समाज की यथावत स्थिति और मानवीय मूल्यों का संवेदनशील प्रदर्शन करती हैं। ज़िन्दगी की उजास को मात्र आप एक कथा संग्रह के रूप में नहीं अपितु लेखक की आत्मा के पुकार के रूप में देख सकते हैं। जिसमे इन्होने समाज को जागरूक करने, पाठकों को प्रेरित करने,और साहित्य को समृद्ध करने की अपनी आकांक्षा को विस्तृत रूप से व्यक्त किया है।

ज़िन्दगी की उजास में इंगित कहानियां सिर्फ मनोरंजन का तथ्य नहीं अपितु विचारों को झकझोड़ने वाली कहानियों का संकलन है। समाज की कड़वी सच्चाइयां जिन्हें अक्सर अनदेखा कर दिया जाता है लेखक ने अपने लेखन के माध्यम से उन संवेदनशील विषयों के ऊपर हमारा ध्यान आकृष्ट करवाने की एक सफल कोशिश की है।

इस कथा संकलन ज़िन्दगी की उजास में नृप जी ने चौदह कहानियों को संकलित किया है। संकलन का प्रारम्भ 'ज़िन्दगी की उजास' नामक कहानी से होता है जिसका मूल उद्देश्य मानसिक अस्वस्था के मूक दंश से पाठकों को परिचित कराना और उसके प्रति जागरूक करना है। सामान्यतया हमारे समाज में मानसिक स्वास्थ्य को लेकर बहुत सारे टैबू हैं, इसकी संवेदनशीलता या तो लोग समझते नहीं या समझना नहीं चाहते। ये कहानी इस विशिष्ट विषय को लेकर बड़ी हीं संवेदनशीलता के साथ लिखी गयी है। इनकी अगली कहानी 'त्याग का दीपक' के गरीब और संघर्षशील पिता के अपनी पुत्री के उज्जवल भविष्य की गाथा को मार्मिक रूप से प्रस्तुत करती है। ये कहानी समर्पण और आत्मबलिदान की है, जो सिद्ध करती है कि सच्ची सफलता सिर्फ भौतिक उपलब्धियों में नहीं अपितु लक्ष्यों के प्रति अडिगता में निहित होती है।

आधुनिक समाज की जटिलताओं का उल्लेख करती हुई और तकनिकी तथा मानवीय मूल्यों के अंतर्द्वंद को प्रस्तुत करती हैं नृप जी की अगली कहानियां 'अनोखा युद्ध' एवं 'गलत कौन' जो कि विकास की अंधी दौड़ में नैतिक मूल्यों के बढ़ते ह्रास को शाब्दिक रूप से चीख-चीख कर बयां करती है। वहीँ सामाजिक असमानता और परंपरागत रूढ़ियों का विरोध करती हैं इस संकलन की अन्य कहानियां 'भूख की तड़प एवं 'संघर्ष की उड़ान' वहीँ अन्य मानवीय संवेदनाओं जैसे प्रेम,आत्मज्ञान, वियोग और स्मृतियों का सजीव चित्रण करती है कथाएं 'सपनों की सरगम' और 'तेरा अक्स' जहां प्रेम आकर्षण की सीमा से कहीं सुदूर आत्मिक पूर्णता का घोतक बनता दीखता है।

नृपेंद्र अभिषेक की लेखनी की खासियत इनकी शिल्पगत भाषा नहीं अपितु संवादों की सहजता है। उनकी भाषा में सामान्य बोलचाल का सहज प्रवाह है, जो कहानियों को और अधिक जीवंत बना देता है। संवाद सीधे-साधे पर आत्मिक और प्रभावशाली हैं जो पात्रों की भावनाओं को गहराई से उभारते हैं। लेखक ने अपनी कहानियों में दिखावटी आदर्शवाद से बचते हुए यथार्थ को ज्यों का त्यों प्रस्तुत किया है। सकारात्मकता और आशावाद लेखक की लेखनी का एक अभिन्न अंग है, जिन्होंने जटिल विषयों को एक सरल साथ हीं प्रभावी स्वरुप प्रदान किया है। ये पुस्तक जितनी हीं भावनात्मक दृष्टिकोण से महत्वपूर्ण है, उतनी हीं सामजिक रूप से भी उत्कृष्ट है।

इस प्रकार ये कहानी संग्रह हर वर्ग के पाठकों के मन को छूने का एक बेहतरीन और सफल प्रयास करती है। ये कहानियां गहन अन्धकार में प्रकाश की एक किरण को ढूंढ लेती है और एक सामजिक और व्यक्तिगत सन्देश सभी पाठकों को देती है कि उम्मीद अभी बाकी है। निश्चय हीं ये पुस्तक हिंदी साहित्य में अपनी एक पृथक और अमिट छाप छोड़ेगी और पाठकों के मनोरंजन के साथ-साथ उन्हें नैतिक रूप से भी एक सुदृढ़ दिशा दिखाएगी। नृपेंद्र जी को उनकी इस शानदार कृति के लिए हृदय से शुभकामनाएं और आभार कि उन्होंने ऐसी अमूल्य कृति की रचना की।

पुस्तक- ज़िन्दगी की उजास
लेखक-नृपेंद्र अभिषेक नृप
प्रकाशन- समृद्ध पब्लिकेशन, नई दिल्ली
मूल्य- 260 रुपये

अथः मूषक-मार्जारी गाथा

लघुकथा

रामेश्वरम तिवारी

मूषकों के मुखिया ने अपनी बढ़ी हुई तादात को ताकत मानकर अपने भीतर यह मुगालता पाल लिया कि वह युद्ध के मैदान में मार्जारी को मात दे सकता है। बस ! फिर क्या था मार्जारी के विरुद्ध अनर्गल प्रलाप करना शुरू कर दिया। पागलों की तरह उटपटांग बकवास करने लग गया।

जैसे कि मार्जारी और उसकी जात-पाँत, दीन-धर्म अलग-अलग हैं। वह सपने में भी मिलकर साथ नहीं रह सकते हैं। वह जब चाहे और जहाँ चाहे पल भर में मार्जारी के हरे-भरे खेत-खलिहान और पहाड़ों को खोखला कर सकता है। और एक दिन सचमुच उसने हद कर दी। औचक मार्जारी के इलाके में घुसकर हँसते-खेलते परिवार के निरीह और निहत्थे सदस्यों को मौत के घाट उतार दिया।

घटना से आक्रोशित होकर मार्जारी ने अपने कुनबे के माननीय सदस्यों की उच्च स्तरीय बैठक बुलाई। उनको मूषकों की खूनी और कायराना हरकत के बारे में बताया। मार्जारी ने अपने उनकी सहमति से निर्णय लिया कि बहुत सहा जा चुका है। अब मूषकों को सख्त सबक सिखाने के सिवाय उनके समक्ष कोई दूसरा चारा नहीं है। और एक रात अर्द्ध रात्रि के समय मार्जारी के योद्धाओं ने मूषकों के इलाक़ों पर घातक धावा बोल दिया।

परिणाम में बदले की कार्रवाई करते हुए मूषकों की फ़ौज ने उलट कार्रवाई की। पर मार्जारी के उड़न खटोलों ने ऐसा तहलका मचाया की कई मूषक मौक़े पर ही मारे गए और बचे-खुचे दुम दबाकर नौ दो ग्यारह हो गए। उनके रहने के ठिकाने मिट्टी के टीलों की तरह भरभराकर ढह गए। और अब आलम यह है कि उधर मूषकों के यहाँ मातम छाया हुआ है और इधर मार्जारी के यहाँ मूषकों को जड़-मूल से नेस्तनाबूत करने की क़सम खाई जा रही है।

कविता

राम ग़ज़ल

डॉ. अंजुम बाराबंकवी

सच्चाई का सार राम हैं
विष्णु के अवतार राम हैं!

मै क्या जानूँ और के मानक
मेरा तो मेयार राम हैं!

सारी दिशाऐं बोल रही हैं
जीवन का आधार राम हैं!

आप बताऐं अपने दिल की
मेरे तो मुख्तार राम हैं!

इस युग तक सीमित मत कीजे
हर युग का विस्तार राम हैं!

समझो तो सरकार बताऊँ?
कण कण में सरकार राम हैं!

हाथ उठा कर ज़रा बताओ
किस किस का संसार राम है!

राष्ट्र प्रथम

सीमा देवेन्द्र

लड़ो और लड़ते रहो प्यारों
के तुम्हें लड़ना ही है लड़ाई

लड़ाइयाँ कभी ख़त्म नही होनी
हम हैं तो लड़ाइयाँ हैं

प्रार्थनाएं जरूर करेगें
तुम्हारी सलामती के लिए
क्योंकि
राष्ट्र प्रथम है
तुममें भी और हममें भी

सीमा से आते संदेसे
हो जाए प्रार्थना के वशीभूत

और ये आस पूरी हो जो
हर स्त्री लगाए
देहरी सजाए खड़ी है
के घर कब आओगे ?

सत्ता, संगठन और राजनेता में समय बड़ा बलवान

व्यंग्य

डॉ. हरीशकुमार सिंह

सत्ता ,संगठन और राजनेता राजनीति की मुख्य धुरी हैं। कहा जाता है कि अगर इनमें तालमेल है तो सब कुछ ठीक नजर आता है मगर कभी कभी इनमें वर्चस्व की लड़ाई छिड़ जाती है और फिर यह तयः करना मुश्किल होता है कि इन तीनों में से कौन बड़ा है ,सर्वश्रेष्ठ है या किसकी चलती है या किसकी सुनी जा रही है। देखा जाए तो संगठन ही सबसे बड़ा होता है क्योंकि संगठन ही सबको जोड़कर रखता है और संगठन के नीचे ही सब काम करते हैं और संगठन ही निर्णय करता है कि कौन चुनाव लड़ेगा और जीतकर सत्ता में जायेगा और कौन संगठन में काम करेगा। संगठन ही तयः करता है कि कौन राजा बनेगा और कौन मंत्री। इसलिए संगठन और संगठन का मुखिया ही बड़ा होता है। संगठन से अलग होकर चुनाव लड़ने वाले चारों खाने चित ही दिखाई दिए हैं।

लेकिन यदि कभी संगठन का मुखिया ही चुनाव लड़ ले और सत्ता पर काबिज हो जाए तो क्या होगा। अब संगठन से सत्ता में आकर यदि सत्ता का मुखिया अपनी ही किसी चरण पादुका को संगठन का मुखिया बना कर बैठा दे तो क्या होगा। तब संगठन का मुखिया ,सत्ता की सुनेगा या सत्ता का मुखिया संगठन को अपने इशारे पर चलाएगा। ऐसे में अब बड़ा तो सत्ता का मुखिया ही होगा और अब वही सब होगा जो वह चाहेगा और संगठन उसकी जेब में होगा और सत्ता बड़ी हो जाएगी।

अब यदि कोई राजनेता ऐसा है जिसे अपने आभामंडल से चुनाव में इतना बहुमत मिला है कि उसे अब अपने सहयोगी दलों ,या जो दलबदल कर सत्ता का कभी सहारा थे , की भी कोई चिंता नहीं है तो अब वह राजनेता जो सत्ता का मुखिया भी है , सबसे बड़ा हो जाएगा और वह अब संगठन से बिना पूछे सभी निर्णय लेगा और तानाशाह बन जाएगा। वह अब किसी को भी कहीं से उठाकर कुछ भी बना देगा और सब चुप रहेंगे। वरिष्ठ और कनिष्ठ का भेदभाव राजनेता खत्म कर देगा और सबको समान अवसर देने का महनीय कार्य कर प्रशंसा पाएगा जबकि हो सकता है ऐसा वह इस डर से भी कर रहे हों कि कोई और राजनेता उनसे आगे न निकल जाए और सब सूत सांवल में रहे इसलिये वह ऐसे ऐसे निर्णय लेगा कि सब आश्चर्यचकित हो जाएं। उनके निर्णय योग्यता - अयोग्यता जैसी कसौटियों से परे भी हो सकते हैं और नहीं भी मगर कोई भी विरोध नहीं कर पाएगा क्योंकि भारी बहुमत उनके पास है।

जाहिर है कि सत्ता, संगठन और राजनेता में अपने बलवान समय के हिसाब से कोई भी बड़ा बन सकता है और सबको उसके हिसाब से चलना पड़ता है। मगर एक समय ऐसा आता है कि सत्ता , संगठन और राजनेता तीनों ही धृतराष्ट्र की तरह आंखे मूंदकर अकेले तो ठीक सामूहिक रूप से भी किसी बड़े मुद्दे पर कोई निर्णय नहीं ले पाते हैं। जैसे कभी अपने ही किसी बड़बोले राजनेता की गटर छाप राजनीति पर जब कोई प्रभावी कार्यवाही नहीं कर पाते हैं तब जनता की आखरी उम्मीद न्यायपालिका को स्वयं संज्ञान लेकर इन तीनों पर चाबुक चलाना पड़ता है और राजनेता अपने कुकृत्य पर माफी मांगते दिखाई देते हैं। जाहिर है कि बड़ी तो न्यायपालिका ही रही है जिसने देश और धर्म की सदैव रक्षा की है। मगर रुकिए न्यायपालिका के सधे हुए इशारे के बाद भी अगर राजनेता की कुर्सी सलामत है तो इसका सबसे बड़ा कारण राजनेता का निजी वोट बैंक है जिससे सत्ता ,संगठन और राजनेता भी डर जाते हैं। इसलिए सबसे बड़ा है वोट और वोट बैंक।

सुबह सवेरे मीडिया एल.एल.पी. के लिए उमेश त्रिवेदी द्वारा पी.जी. इंफ्रास्ट्रक्चर एण्ड सर्विसेस प्रा. लि., राउखेड़ी, देवास रोड, इंदौर से मुद्रित एवं 662, साईं कृपा कॉलोनी, बॉम्बे हॉस्पिटल के सामने, इंदौर से प्रकाशित।

प्रधान संपादक - उमेश त्रिवेदी
संपादक (म.प्र.) -विनोद तिवारी
कार्यकारी प्रधान संपादक - अजय बोकिल
स्थानीय संपादक - हेमंत पाल
प्रबंध संपादक - अरुण पटेल

(सभी विवादों का न्याय क्षेत्र इंदौर रहेगा)
RNI No. MPHIN/ 2015/ 66040,
Mobile No.: 09893032101
Email- subahsaverenews@gmail.com

'सुबह सवेरे' में प्रकाशित विचार लेखकों के निजी मत हैं। इनसे समाचार पत्र का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

कला

पंकज तिवारी

कला समीक्षक

कृतियों पर चर्चा से कतराते हैं लोग: नंद कात्याल

कला-कर्म और विषय को लेकर कलाकार नंद कात्याल जी कहते थे कि देखो भाई पेंटिंग जब हम शुरू करते हैं, कोई इंस्पिरेशन का वेट नहीं करते यह एक कम्पल्सर है हमें पेंटिंग करनी है, नहीं तो ऐसा लगता है कि जैसे साँस ही नहीं लिया। जो उस वक्त है चाहे विजुअल है या मेमोरी है वह हम कैनवास के ऊपर डालने की कोशिश करते हैं और फिर करते-करते एक स्टेज ऐसा आता है कि जब वह पेंटिंग अपने आप बढ़ने लगती है अपना सफर वो खुद तंय करने लगती है जो हमारे पास एक्सपीरियेंसेज है वह किसी तरीके से उस पर आ जाते हैं। यह एक ऐसी चीज है जो आपको टच करता है। उसमें कोई डिजाइन बनाने की जरूरत नहीं है। मैं तो सोचता हूँ कि पेंटिंग कोई डिजाइन या पैटर्न नहीं है और ये भी नहीं है कि हम कोई बड़ी चीज, नई चीज निकाल के लाएं। यूरोप में, वेस्ट में यह बात बहुत है कि जैसे गाड़ियों के नए मॉडल बनते हैं ऐसे ही हम भी एक नया मॉडल बनाएं। होड़ का जमाना है अब। मुख्य बात ये है कि मैं ऐसा करूँ जो कहीं न हुआ हो वाली विचारधारा प्रबल हो गयी है आजकल। मैं तो बहुत माइनर सा आर्टिस्ट हूँ, मैं सोचता हूँ कि जो मेरे अंदर की आवाज है वो सामने आ जाए, कोशिश करते हैं और वही अभी तक चालू है। ये कोई ऐसी चीज तो है नहीं कि मैंने पा लिया, ऐसा तो मैं नहीं कहूँगा ना। हमारी तो रोज ही स्ट्रगल होती है, पेंटिंग तो अपने आप बन जाती है पर बड़ी जद्दोजहद भी है आमतौर पर चाहे कोई महीना लगाएं, चाहे कोई दो दिन, मेरे ख्याल से पेंटिंग्स फाइनल होती है ना तो तकरीबन आधे घंटे या एक घंटे में ही हो जाती है लेकिन उसकी जो तैयारी है वह बहुत चलती रहती है, बड़ी लंबी हो जाती है, कई बार नहीं होती है पर हर एक के अपने-अपने विचार हैं और होने भी चाहिए। अपनी सोच है और अपना विजुअल है असल बात तो ये है कि आपका अनुभव उसमें कितना आ गया है। लाइफ में जो झटके हैं उसको ही दिखाना ठीक नहीं है। आप जब पेंटिंग बनाते हैं तो उसमें अपना रोना नहीं रो रहे होते हैं बल्कि अपनी मदद कर रहे होते हैं। आप खुद को एक्सप्रेस कर रहे होते हैं, अपने तकलीफों का जो रोना करते हैं ठीक नहीं करते।

आर्ट कैंपो को लेकर कात्याल जी कहते थे कि आर्ट कैंप अच्छा है भई, मेरा आर्ट कैंप हुआ था लद्दाख में, आईकेडीसी ने किया था शायद 2001 में। मेरे लाइफ में ये बड़े चेंजेज मोमेंट्स थे। मैंने ऐसे लैंडस्केप नहीं सोचे थे जो लद्दाख कैंप में मैंने बनाया था। अभी भी मेरी इच्छा है लद्दाख जाने की पर थोड़ी उम्र हो गई है। सब लोग मना कर रहे हैं लेकिन एक बार जाएंगे। मेरे ख्याल से वह एक अजूबा है जिसका मेरे पर इफेक्ट हुआ। आर्ट कैंप एक बार लक्षदीप में भी हुआ था। थोड़ा मुश्किल होता है जाना, बाकी आर्ट कैंप ठीक है, एक ग्रुप फील होता है, आदान-प्रदान होता है। बड़ी अच्छी फीलिंग होती है, सुबह से शाम तक आप एक दूसरे के साथ बैठे हो जब। यहाँ भी कैंप हुआ था एक बार मिसेज अलकाजी ने करवाया था बड़ा अच्छा था। तैयब भी वहाँ पर थे वो ड्राइंग करते थे, नीलिमा शेख भी थी, कभी-कभी अर्पिता भी आ जाती थी शाम को, बैठे-बेठे बातें भी करते और आर्ट पर डिस्कस भी हो जाता था। यह फायदा जरूर है।

भारत में हो रहे कला समीक्षा पर भी कात्याल जी के विचार बड़े स्पष्ट थे उनका कहना था कि हमारे यहाँ आर्ट क्रिटिसिज्म में एक बड़ी कमी है कि कृति को खुद के नजर से न देखना। जब ग्रीनबर्ग आए थे तो वो कुछ भी बात नहीं करते थे बस पेंटिंग के सामने खड़े होकर पेंटिंग पर ही बात करते थे। एक बार पणिक्कर साहब भी आए हुए थे उस समय मैं भी गैलरी में ही था एक पेंटिंग मास्को की थी और एक मारिस लुइस की। पणिक्कर साहब हम

लोगों को दोनों पेंटिंग के सामने ले गए और पूछा बताओ इसमें से कौन सी आपको ज्यादा इंप्रेस करती है। हम सब तो जानते थे कि मारिस लुइस कोई इतना फेमस नहीं था पर उस पेंटिंग में वो मास्को से कहीं आगे था मैंने तो बोल दिया कि मारिस लुइस मुझे ज्यादा प्रभावी लगा। कृतियों से संवाद की कमी है अपने यहाँ। आपने कभी देखा है हमारे यहाँ कोई नहीं, कोई करने को तैयार नहीं। मेरा एक बार शो था अलकाजी साहब के गैलरी (2004) आर्ट हेरिटेज में, पता नहीं उस वक्त मैं किस मूड में था कोई एक मेरा इंटरव्यू ले रही थी हिंदू मैगजीन के लिए। उस वक्त बातचीत में मैंने कह दिया कि आजकल के क्रिटिक कुछ नहीं है। उसने कहा मतलब? मैंने कहा कि आजकल के आर्ट क्रिटिक स्पाइनलेस है, हिम्मती नहीं है। आर्टिकल छप गया जिसमें ऊपर गायत्री सिन्हा ने एक रिव्यू किया हुआ था उसी पेज पर दूसरा मेरा इंटरव्यू आ गया। अब उसकी वजह से बहुत सारे लोग मुझ से नाराज हो गए लेकिन मेरे ख्याल में अब मैं कहता हूँ कि मुझे ऐसा नहीं कहना चाहिए था।

खैर मैं उसे डिनाई नहीं कर रहा हूँ कि मैंने उस वख़त क्यों कहा लेकिन मैं क्यों कहता हूँ कि मैंने गलत किया क्योंकि अब 15 - 16 साल के बाद इस समय मैं जो सोचता हूँ, ऐज ए पेंटर मैंने भी कोई बड़े खम्भें नहीं गाड़ दिए हैं तो क्यों बेचारे क्रिटिक्स को ही मैंने क्रिटिसाइज किया और अपने को देखा नहीं। मैं इस समय अपने को महसूस करता हूँ कि ऐज अ पेंटर मैंने कोई रिवोल्यूशन नहीं कर दिया। कोशिश होती है कि जो हम करे वो नया हो, हो सकता है वो हमारे लिए नया है लेकिन जनता के लिए शायद ना हो।

इतनी सारी गैलरियां है इतने लोग एक्ज़िबिट कर रहे हैं लेकिन कोई प्रॉपर क्रिटिक... वो करते नहीं हैं।

हालांकि कुछ लोग कर भी रहे हैं गायत्री भी कर रहीं हैं और गीता तो खैर लिखती ही है काफी।

लेकिन पब्लिक में, न्यूज़पेपर में, मैगजीन में ऐसा कहीं नहीं है जो पब्लिक को पता लगे।

एक से दूसरे भाषा में अनुवाद होने चाहिए ताकि जो विचार है लोगों तक पहुंचे, इसके बाद लोगों के बीच इस पर थोड़ा बहुत मंथन भी होना चाहिए।

सब लोगों ने अपने-अपने जो थिअरीज निकाली थी अब वो कहाँ है? खत्म हो गई है ग्रीनबर्ग उस वक्त कहता था कि सिर्फ कलर ही है पर आर्टिस तो आर्टिस्ट हैं वह कोई क्रिटिक के कहने पर थोड़ी चलते हैं। एक बार फारुखी साहब जो डायरेक्टर थे नेशनल गैलरी के, उन्होंने एक इंटरव्यू में कहा कि हमारे यहाँ कोई आर्ट नहीं है, इसमें हमारा अपना कुछ नहीं है मुझे अच्छा नहीं लगा मैंने एक पत्र लिखा, अखबार में दे दिया जो छप भी गया जिसमें मैंने कहा कि अगर नेशनल गैलरी ऑफ मॉडर्न आर्ट के डायरेक्टर सोचते हैं कि हमारा आर्ट कुछ नहीं है, हमारा अपना कुछ नहीं है तो फिर वो आर्ट को कैसे बढ़ा पायेंगे। उनको बुरा भी लगा, खैर वहाँ भी मेरी गलती थी कि बिल्कुल ऐसा डालने की क्या जरूरत थी। उस वक्त मुझे एक बात और याद आई थी इनके पहले जो डायरेक्टर थे सिहारे साहब, वह एक नेशनल एग्जिबीशन के सेलेक्टर थे पहले एकाध आदमी ही सेलेक्ट करते थे बाद में लोगों ने पैनल बना दिया जैसे हम चार लोग नेशनल एग्जिबिशन को सेलेक्ट करते हैं, सेलेक्ट नहीं करते बल्कि अवार्ड हेतु फाइनल करते हैं। सेलेक्ट तो और कोई बॉडी करती है। उस वक्त सिहारे साहब ने स्टेटमेंट डाला था नेशनल एग्जिबीशन ललित कला के उसमें। लिखा कि आवर आर्टिस्ट आर डेरिवेटिव मोस्ट ऑफ देम। संतोष को उन्होंने अवार्ड तो दिया था पर यह भी कहा था कि संतोष एक मेरे को ओरिजिनल लगता है बाकी सब डेरिवेटिव हैं। वो भूल ही गए हैं कि जो हमारे सीनियर थे उन्होंने कैसे-कैसे काम किए। कलाकृति नंद कात्याल, गूगल से साभार।

दृष्टिकोण

विवेक कुमार मिश्र

लेखक हिंदी के प्रोफेसर हैं।

अंकों से ऊपर उठकर प्रतिभा को पहचाने

दसवीं और बारहवीं का रिजल्ट आता है तो हर तरफ अंकों की चर्चा शुरू हो जाती है । किसे कितना प्रतिशत मिला कौन प्रथम श्रेणी से पास हुआ तो किसे डिक्टेंशन मार्क मिला । किसे किस विषय में डिक्टेंशन मिला या पांचों विषय में डिक्टेंशन मिला है, कौन जिला टाप किया है तो कौन बोर्ड टापर बना है यह आज और आज से पहले भी हर दौर में चर्चा का विषय हुआ करता था । आज तो अब पूरे के पूरे अंक भी मिल जा रहे हैं यानी 100 में 100 नंबर वह भी गणित में नहीं अंग्रेजी,

केवल नंबर ही सबकुछ नहीं होता यदि उस अंक के साथ जीवन जीने की कला नहीं आ पाती तो अंक का कोई खास मतलब नहीं रह जाता। अंक के साथ ही समझदारी की भी उम्मीद बढ़ जाती है जो अंक मार्कशीट में है उसी के साथ व्यावहारिक धरातल पर वह बालक कितना आगे आता है यह भी देखना जरूरी हो जाता है । अंकों की दुनिया पूरे बाजार में छा जाती है , प्रतिभाशाली बच्चों को अलग ही नजर से देखा जाता है और जन्मजात प्रतिभा और अंक की स्थिति कुछ ही हाथों में रहती बाकी तो अपनी अपनी दुनिया में मगन रहते । कोई उनकी चर्चा करता भी नहीं और वे चाहते भी नहीं कि कोई चर्चा करें । पर हर किसी के मन में यह बात तो रहती ही रहती है कि उसे बढ़िया अंक मिले पर अंक तो तभी मिलेगा जब उसके लिए अपने को पूरा झोंक दिया हो पर बहुत सारे बच्चे इस तरह से ही होते हैं कि उन्हें पढ़ने के अलावा और भी बहुत सारे काम करने होते हैं, उनका मन पढ़ने के अलावा और बातों में लग जाता है फिर उन्हें कहां से अंक मिलेगा ।

हिंदी और समाज विज्ञान में भी 100 में 100 नंबर पा रहे हैं परीक्षार्थी । वह भी कोई एक नहीं हर जोन में इस तरह के विद्यार्थी सामने आ रहे हैं ।

अब अंकों की दुनिया पूरे समाज में छा जा रही है , जैसे प्रतिभा का एकमात्र पैमाना यहीं हों पर यह सच का केवल एक भाग हो सकता है । केवल नंबर ही सबकुछ नहीं होता यदि उस अंक के साथ जीवन जीने की कला नहीं आ पाती तो अंक का कोई खास मतलब नहीं रह जाता। अंक के साथ ही समझदारी की भी उम्मीद बढ़ जाती है जो अंक मार्कशीट में है उसी के साथ व्यावहारिक धरातल पर वह बालक कितना आगे आता है यह भी देखना जरूरी हो जाता है । अंकों की दुनिया पूरे बाजार में छा जाती है , प्रतिभाशाली बच्चों को अलग ही नजर से देखा जाता है और जन्मजात प्रतिभा और अंक की स्थिति कुछ ही हाथों में रहती बाकी तो अपनी अपनी दुनिया में मगन रहते । कोई उनकी चर्चा करता भी नहीं और वे चाहते भी नहीं कि कोई चर्चा करें । पर हर किसी के मन में यह बात तो रहती ही रहती है कि उसे बढ़िया अंक मिले पर अंक तो तभी मिलेगा जब उसके लिए अपने को पूरा झोंक दिया हो पर बहुत सारे बच्चे इस तरह से ही होते हैं कि उन्हें पढ़ने के अलावा और भी बहुत सारे काम करने होते हैं, उनका मन पढ़ने के अलावा और बातों में लग जाता है फिर उन्हें कहां से अंक मिलेगा । एक समय में एक ही काम किया जा सकता है । जब आप मल्टी टास्क होकर काम करते हैं तो फिर औसत दुनिया के औसत अंक से ही काम चलाना पड़ता है । मान लीजिए आपकी रूचि खेती-बाड़ी में है, खेलने में है और साथ में आपको पढ़ना भी है तो फिर पढ़ने में अंक कम ही आयेगा पर इससे आपकी क्षमता और प्रतिभा पर कोई फर्क नहीं पड़ता । प्रतिभा को जब अवसर मिलेगा वह चमक ही जायेगी । ऐसे अनेकों उदाहरण हैं जिनके पास अंक की कोई ऐसी गिनती नहीं है जिसे कहीं दिखाया जाये या सुनाया जाए पर उनकी प्रतिभा पूरी दुनिया मानती है । प्रतिभा, कोई खास गुण कोई विशेष क्षेत्र हर व्यक्ति में ईश्वर भर कर भेजता है ।

सबसे कुछ न कुछ अलग कार्य लेना है । हर कोई हर कार्य नहीं कर सकता पर हर किसी के पास कुछ अलग हटकर बड़ा कार्य करने की क्षमता है ।

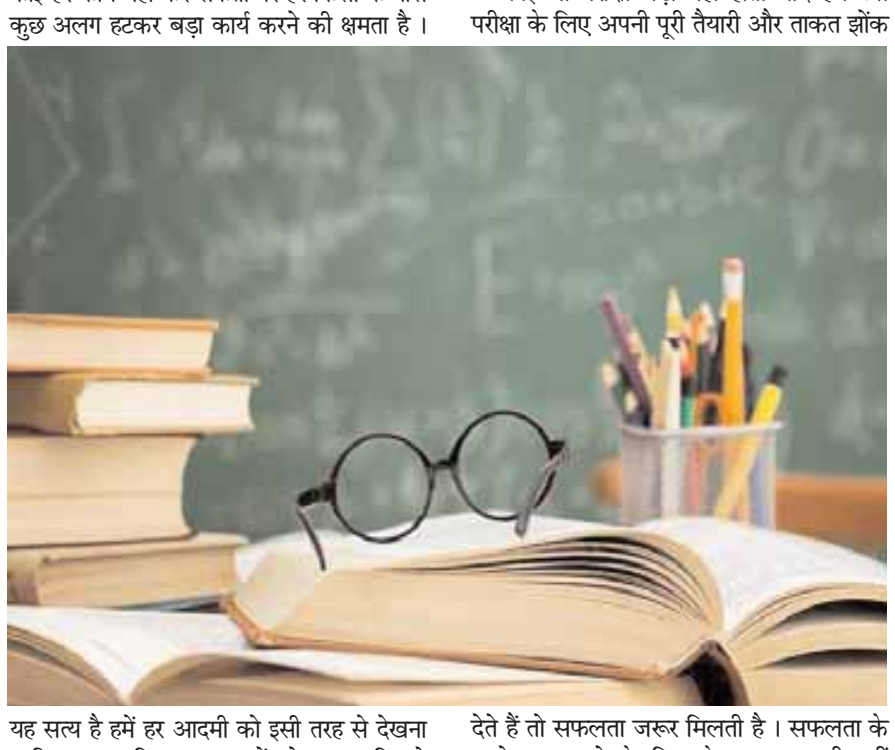

यह सत्य है हमें हर आदमी को इसी तरह से देखना चाहिए । माता पिता जब बच्चों को इस नजरिए से देखते हैं कि उनका बच्चा किसी क्षेत्र विशेष में अलग हटकर है और वह अपनी अलग पहचान बना सकता है तो उसी अनुसार उसके लिए अवसर और तैयारी कराना चाहिए । हर बच्चे को आप अंकों के खेल से नहीं पहचान सकते । आपको यह समझने और देखने की जरूरत है कि बच्चे की रूचि क्या है ? वह किस ओर जाना चाहता है ? वह क्या पढ़ना चाहता है उसका स्वयं का क्या विजन है ? वह क्या सोचता है या क्या करना चाहता है । जब इस तरह से विचार करते हैं तो हम बच्चे की मूल वृत्ति को समझने की कोशिश करते हैं और फिर उसी अनुशासन में उसे रखने की जरूरत होती है । सबसे बड़ी दिक्कत जो होती है वह सामाजिक फोबिया की है । कुछ चीजों के प्रति हमारे समाज में विशेष आग्रह है कि यहीं होना है और फिर पूरा समाज ही एक तरह का सपना देखने लगता है । सबको बस एक ही बात समझ में आती है कि बच्चे को डॉक्टर या इंजीनियर बनाना है । और फिर सब उसके पीछे पड़ जाते हैं जबकि ऐसा बिल्कुल नहीं होना चाहिए यदि बच्चे की रूचि खेल में है तो उसे खेल की दुनिया से जोड़िए, यदि उसकी रूचि संगीत में है तो उसे संगीत से जोड़े या इसी तरह यदि उसकी रुचि डांस में हैं तो डांस से जोड़े । बच्चे को क्षेत्र विशेष से उसकी रूचि के हिसाब से जोड़कर माता पिता को उसके लिए अवसर देना होता है, यह देखना होता है कि वह अपने क्षेत्र में क्या कर रहा है और कैसे कर रहा है । माता पिता और शिक्षक बच्चों को रास्ता दिखाते हैं और रास्ता देते हैं । यहीं पर उन्हें यह सीख देना होता है कि वह हर क्षेत्र में तभी आगे जा सकते हैं जब उसके लिए कठोर मेहनत, साधना और संकल्प लेकर काम करेंगे । किसी भी क्षेत्र में कुछ करने के लिए कोई शार्टकट नहीं होता न ही किसी को गिराकर आप आगे जा सकते हैं । आगे बढ़ने का बस एक ही रास्ता है वह है कठोर मेहनत, लगन, तपस्या, और संकल्प के साथ बड़े सपने ही दूर तक चलते हैं । बच्चों के कोमल मन पर कभी भी अंक का दबाव नहीं होना चाहिए न ही अन्य के अंकों से उनकी तुलना करनी चाहिए । उन्हें बस उनका रास्ता बताना चाहिए कि यह रास्ता है और इस रास्ते से मंजिल पर इस तरह से पहुंचा जा सकता ।

कोई भी परीक्षा बड़ी नहीं होती यदि हम उस परीक्षा के लिए अपनी पूरी तैयारी और ताकत झोंक देते हैं तो सफलता जरूर मिलती है । सफलता के रास्ते पर चलने के लिए केवल सपना ही नहीं देखते बल्कि सपने को पालने की ज़िद रखनी पड़ती है । कोई भी सफलता संकल्प की ज़िद पर पूरी होती है। यह हमारे कार्य करने की शक्ति और स्थिति पर निर्भर करता है । सफलता पाने के लिए अपना रास्ता खुद बनाना पड़ता है दूसरे की सफलता बस रास्ते का एक उदाहरण भर होती है । हर आदमी का टुल उसके हिसाब से अलग ही होता है दूसरे के हथियारों से हम अपनी लड़ाई नहीं लड़ सकते । हमें तो अपनी लड़ाई अपने ही हथियारों से लड़नी है । जब इस तरह से कोई पथ हम बनाते हैं तो उस पथ पर चलने का सुख ही अलग होता है । हमें अपना उदाहरण स्वयं बनना पड़ता है । हमारी सफलता हमारे संकल्प की सिद्धि होती है । हमें यह परिभाषित करना होता है कि हमें कहां जाना है और उस अनुसार हम संसार को अपने जीवन में बरतते हैं । यह स्थिति ही हमारे जीवन में सफलता की आधारभूमि बनती है । जीवन में कुछ बड़ा करने के लिए हमें अंकों के खेल से उपर उठकर सोचना होता है । अंक का अपना महत्व है इससे कोई भी नकार नहीं सकता पर अंक ही सबकुछ है ऐसा नहीं हो सकता । इससे आगे बढ़कर अपनी क्षमता और अपनी स्थिति व दुनिया को देखना होता है कि हम क्या कर सकते हैं फिर उस हिसाब से चलना होता है। सफलता और असफलता के बीच जीवन संघर्ष चलता रहता है । अपार धैर्य , लगन और निष्ठा हो तो कोई भी परीक्षा बड़ी नहीं होती है । जीवन के विराट आंगन में हर कदम पर हम सब परीक्षा ही दे रहे होते हैं । जीवन को अंक से उपर उठकर ही सही ढ़ंग से देखा जा सकता है ।

प्रयोग से चरमरा गया 'रॉयल्स' का ढाँचा

वेब सीरीज समीक्षा

आदित्य दुबे

(लेखक वेबसाइट ई-अंतर्भव में प्रबंध निदेशक हैं)

'कु वेबसिरीज़ -'रॉयल्स ' की समीक्षा लिखने के पहले यह सवाल उठाया जाना स्वाभाविक होगा कि ऐसी वेबसिरीज़ किन दर्शकों के लिये बनाई जाती है ? उन भारतीय दर्शकों के लिये जो निर्माता-निर्देशक जो भी बना दे उसे देखने के लिये अभिशप्त हैं या फिर जिसे देखने के लिए दुनिया भर में बसे भारतीय उत्सुक हो जाएं। नेहा वीना शर्मा नेटफ्लिक्स की जरूरतों के हिसाब से एक ऐसी ही वेब सिरीज रचने में सफल रही है।एक रोमाण्टिक कॉमेडी फिल्म जैसा इसका कैनवास इस हिसाब से लगता भी ठीक ठाक है, बस इस कैनवास पर कलाकारी करने के लिए बाकी जो लोग आए उन्होंने एक के बाद एक इसमें प्रयोग किये और सिरीज ने एक अज़ीब-सी शक्ल अख्तियार कर ली। किसी भी वेबसिरीज के पहले दो एपीसोड तो कहानी को सेट करने में ही खप जाते हैं और बकाया छः एपीसोड में भी कहानी को यदि ठीक से नहीं फिल्माया गया तो पूरी सिरीज का ढाँचा चरमरा जाता है और इस वेबसिरीज़ का भी यही हश्र हुआ है ।

इस सिरीज़ की सबसे कमजोर कड़ी उसकी कास्टिंग है । सिरीज़ में बीते जमाने की जीनत अमान और छोटे परदे के बड़े नाम वाली साक्षी तँवर की मौजूदगी से अभिनय पक्ष के मजबूत होने की स्थिति तो बनती है मगर इस अनुकूलता को नये कलाकार सुमुखी सुरेश और लीसा मिश्रा उसे बांध नहीं पाये । सिरीज़ की मुख्य भूमिका निभाने वाले ईशान खट्टर और भूमि पेडनेकर ने अपनी भूमिकाओं के साथ न्याय किया है। दोनों ही खूबसूरत लगे हैं, मगर उनकी आपसी जुगलबन्दी को और मजबूत किया जाना चाहिए था । विहान समत और काव्या त्रेहान ने भी अपने चरित्रों को खूबसूरती से पेश किया है। बॉलीवुड के बुजुर्ग हीरो के रूप में चंकी पांडे मनोरंजक भूमिका में हैं । नोरा फतेही और डीनो मोरिया अतिथि भूमिका में भी प्रभावित करते हैं । सिरीज़ में नोरा फतेही और डीनो मोरिया स्पेशल अपीयरेंस में हैं और उन्होंने इस जिम्मेदारी का ठीक-ठीक निर्वाह भी किया है । उदित अरोड़ा ने भी सिरीज़ में दमदार अभिनय किया है ।

कास्टिंग के बाद सिरीज की दूसरी कमजोर कड़ी है इसकी प्रोडक्शन डिजाइन । इसका कलर टैम्पलेट आँखों को बहुत ज्यादा चुभता है। अंतरा लाहिड़ी चाहती तो ऐसे तमाम दृश्य सम्पादन में हटा सकती थीं जिन्हें देखते समय दोहराव सा महसूस होने लगता है , मगर उन्होंने ऐसा नहीं किया । प्रियंका घोष और नूपुर अस्थाना के निर्देशन में राजसी परिवार की यह कहानी शानदार ढंग से शुरू होती है, मगर एपीसोड्स के बढ़ने के साथ ये बिखर जाती है। पटकथा कहानी की एक और कमजोर कड़ी है, जो एक साथ बहुत सारे मसालों को सही मात्रा मे नहीं बांध पाती है ।राजसी जिन्दगी और सेट डिजाइन शानदार हैं, ख़ासकर राज्याभिषेक वाला सीन, मगर कई ट्रैक्स और मुद्दों के बीच यह सिरीज़ झूलती रहती है।हर्ष उपाध्याय, कनिष्क सेठ के साथ रूह और जोह ने कुछ अच्छे राजसी आभा मण्डल की अनुभूति जगाने वाले गाने बनाए होते तो भी कुछ और ही बात होती। अच्छे गीत-संगीत वाली सिरीज़ तो अब एक सपना हो गई है। वैसे सिरीज का बैकग्राउंड स्कोर और गाने विषय के मुताबिक हैं।

इस सिरीज़ के तकनीशियनों की सूची देखकर ऐसा लगता है कि यह सिरीज़ महिला सशक्तीकरण के विचार को हिन्दी सिनेमा में स्थापित करने के लिए बनाई गई है। यह भी लगता है कि जिन कलाकारों हिन्दी सिनेमा के बड़े परदे से बोरिया बिस्तर करीब करीब बंध चुका है, उनको सहारा देने के लिए ये सिरीज बनी है।लेखक के रुप में नेहा वीना शर्मा , हर्ष और अनुकम्पा और निर्देशक के रुप में प्रियंका घोष और नूपुर अस्थाना इस तथ्य की पुष्टि करते हैं।सिरीज में महिलावाद और समलैंगिक सम्ब को थोड़ी और सहजता से और तार्किक रुप से मज़बूत बनाया जाता तो सुधी प्रेक्षकों की दिलचस्पी और बढ़ती। बीच -बीच में कहानी अपनी रफ्तार तो पकड़ती है। और कुछ दृष्यों में भावनात्मक रुझान भी मज़बूत लगता है मगर अफसोस अगले ही फ्रेम में सिरीज़ फिर प्रेडिक्टिबल हो जाती है।

कांग्रेस ने लल्ली चौक पर फूंका डिप्टी सीएम का पुतला

बैतूल। सेना को प्रधानमंत्री के चरणों में नतमस्तक बताने वाले बयान के विरोध में कांग्रेस ने शनिवार 17 मई को लल्ली चौक पर डिप्टी सीएम का पुतला दहन किया। जिला कांग्रेस अध्यक्ष हेमन्त वागद्रे के नेतृत्व में लल्ली चौक पर कांग्रेस कार्यकर्ताओं ने जमकर भाजपा सरकार और उसके मंत्रियों के खिलाफ नारेबाजी की। कांग्रेस अध्यक्ष ने कहा कि सेना देश की आन-बान-शान है, उसे किसी व्यक्ति

विशेष के चरणों में समर्पित बताना सेना की वीरता, शौर्य एवं उनके मनोबल को गिराता है। साथ ही यह घटिया राजनीति है। उपमुख्यमंत्री जगदीश देवड़ा का यह बयान भाजपा सरकार की दूषित मानसिकता को उजागर करता है, जो सत्ता के नशे में देश की मर्यादाओं को रौंद रही है। जैसे ही कांग्रेस नेताओं ने लल्ली चौक पर देवड़ा और विजय शाह के खिलाफ नारे लगाते हुए पुतला जलाया उसी समय पुलिस मौके पर पहुंच गई एवं नगर पालिका की फायर बिग्रेड से पानी की बौछार से पुतले की आग बुझाने का प्रयास किया पर कांग्रेसी पुतला जलाने में सफल रहे। देखते ही देखते कार्यकर्ताओं ने सेना के सम्मान में नारे लगाते हुए देवड़ा का पुतला जलाकर भाजपा को यह संदेश दे दिया कि सेना के सम्मान से कोई भी समझौता बर्दाश्त नहीं किया जाएगा। इस प्रदर्शन में जिला कांग्रेस अध्यक्ष हेमन्त वागद्रे, प्रदेश महामंत्री रामू टेकाम,प्रदेश सचिव समीर खान, अरुण गोठी, हेमंत पगारिया, नवनीत मालवीय, शेख असलम, अनुराग मिश्रा, रमेश गायकवाड़, मोनू बड़ोनिया, राजेश गावंडे, मोनू वाघ, राजा सोनी सहित बड़ी संख्या में कांग्रेस कार्यकर्ता मौजूद रहे।

19 बसों के विरूद्ध चालानी कार्रवाही

बैतूल। जिले में सडक़ दुर्घटनाओं एवं दुर्घटना में मृत्यु दर में कमी लाने के लिए पुलिस परिवहन शोध संस्थान द्वारा 13 मई से 31 मई 2025 तक विशेष अभियान चलाया जा रहा है। अभियान के तहत बैतूल शहर में 50 से अधिक वाहनों की चेकिंग की गई, जिसमें एक वाहन चालक द्वारा स्कूली बच्चों को ऑटो पर क्षमता से अधिक बैठाकर ले जाया जा रहा था एवं एक बस के विरुद्ध बिना किसी फिटनेस के लोक परिवहन पर पाई गई, जिस पर जुर्माना किया गया। इसके साथ-साथ अन्य 19 बसों के विरुद्ध मोटरयान अधिनियम के तहत चालानी कार्रवाई की गई। जिससे लगभग 20,000 रूपये समन शुल्क वसूला गया।

तपिश के बाद बारिश किसानों को मिलेगी मदद

बारिश के बाद बढ़ी उमस, लोगों ने लिया पंखे-कूलर का सहारा

बैतूल। शनिवार दोपहर बाद जिला मुख्यालय पर बारिश हुई। यह बारिश जिले के अन्य क्षेत्रों में भी दर्ज की गई है। वैसे सुबह से ही आसमान में बादल छाये हुए थे। जिससे लोगों को उमस का सामना करना पड़ा, लेकिन दोपहर 3 बजे अचानक बारिश शुरू हो गई। जिससे गंज बाजार में अफरा-तफरी का माहौल बन गया। बारिश के साथ ठंडी हवाएं भी चलीं। इससे

लोगों को गर्मी से राहत मिली। मौसम विभाग के मुताबिक 21 मई को गरज-चमक के साथ अच्छी बारिश की संभावना है। पिछले दिनों का तापमान की बात करें तो 15 मई को अधिकतम 37.5 डिग्री और न्यूनतम 25.2 रहा। वहीं 16 मई को दिन का तापमान अधिकतम 36.2 डिग्री और न्यूनतम 24.8 दर्ज किया गया। हालांकि बारिश के बाद उमस बढ़ गई और लोग दिनभर कूलर और पंखों का सहारा लेते नजर आए। मौसम विभाग ने बताया कि पश्चिमी विक्षोभ के कारण जिले में अगले 24 घंटे तक मौसम ऐसा ही बना रह सकता है। कुछ इलाकों में गरज-चमक के साथ बारिश की संभावना है और 40 से 50 किमी प्रति घंटे की रफ्तार से तेज हवाएं भी चल सकती हैं। इधर बदलते मौसम और तापमान के उतार-चढ़ाव का असर अब लोगों की सेहत पर दिखने लगा है। जिला अस्पताल में मौसमी बीमारियों से पीड़ित मरीजों की संख्या तेजी से बढ़ रही है।

बारिश से बढ़ेगी भूमि की नमी- किसान मनोज बारगे, रामप्रसाद ने बताया कि वर्तमान में अधिकतर खेत खाली हैं। किसान खरीफ फसलों की तैयारी कर रहे हैं। समय से पहले हुई यह बारिश भूमि की नमी बढ़ाएगी। इससे रोपाई की पूर्व तैयारी में मदद मिलेगी। मिट्टी में जीवन शक्ति भी लौटेगी। कुछ किसानों का कहना है कि अधिक बारिश होने से खड़ी सब्जियों और फलों की फसलों को नुकसान हो सकता है। व्यापार पर बारिश का मिला-जुला असर देखा गया। कुछ कारोबारियों को फायदा हुआ तो कुछ को परेशानी का सामना करना पड़ा।

ऐतिहासिक भव्य तिरंगा यात्रा में राष्ट्रभक्ति का उमड़ा सैलाब

ऑपरेशन सिंदूर की सफलता पर सैनिकों के प्रति आभार व्यक्त करने के लिए संपूर्ण धार था सड़कों पर

धार, राजेश शर्मा। भारतीय सेना द्वारा आतंकियों के विरूद्ध की गई ऑपरेशन सिंदूर की सफलता पर भारतीय सेना के शौर्य एवं पराक्रम के प्रति आभार व्यक्त करने के लिए

शनिवार को मानों संपूर्ण धार शहर सड़कों पर था। ऐतिहासिक धारा नगरी में भव्य तिरंगा यात्रा में राष्ट्र भक्ति का सैलाब उमड़ पड़ा। युवा, मातृशक्ति से लेकर वरिष्ठ जन का तिरंगा यात्रा में जोश देखते ही बन रहा था। राष्ट्रीय सुरक्षा के लिए नागरिक अभियान द्वारा भव्य तिरंगा यात्रा का आयोजन किया गया। तिरंगा यात्रा शहीद चौक (टीवीएस चौराहा) से लालबाग मोहन टॉकीज से नगर के मुख्य मार्ग होते हुए राजवाड़ा पर समापन होगा। इस तिरंगा यात्रा में नगर के पूर्व सैनिक मुस्लिम और बोहरा समाज जन , प्रतिभावान खिलाडी अनेक सामाजिक संगठन, महिला और युवा, नगर के आमजन हाथ में राष्ट्रीय झंडा लेकर देश भक्ति नारे लगाते हुए यात्रा में शामिल हुए । तिरंगा यात्रा के आरंभ में शहीद भगत सिंह चौराहे पर केंद्रीय राज्य मंत्री श्रीमती सावित्री ठाकुर पूर्व केंद्रीय मंत्री विक्रम वर्मा संभाग प्रभारी राघवेंद्र गौतम , भाजपा जिला अध्यक्ष निलेश भारती ,विधायक नीना वर्मा ,पूर्व मंत्री राजवर्धन सिंह ने अमर शहीद क्रांतिकारी की प्रतिमा पर माल्यार्पण कर भारत माता की जय घोष के साथ शुरू हुई।

भारतीय सेना के शौर्य, पराक्रम और अदम्य साहस पर संपूर्ण देश को गर्व है- केंद्रीय राज्यमंत्री सावित्री ठाकुर

इस अवसर पर सावित्री ठाकुर ने कहा की प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में भारत की सेना ने पाकिस्तान में दाखिल होकर दुश्मनों से बदला लिया । भारतीय सेना के शौर्य, पराक्रम और अदम्य साहस पर संपूर्ण देश को गर्व है । ऑपरेशन सिंदूर के माध्यम से दुनिया के सामने हमारी सेनाओं ने साहस और शौर्य के प्रमाण दिए हैं। तिरंगा यात्रा का नगर के मुख्य मार्गो पर स्वागत मंच लगाकर अनेक संगठनो द्वारा भारत माता की आकर्षक झांकी व पूर्व सैनिको पर पुष्प वर्षा कर स्वागत किया। तिरंगा यात्रा में विशेष रूप से तिरंगा यात्रा अभियान संयोजक विश्वास पांडे सहसंयोजक राकेश पटेल और ईश्वर कटारा भाजपा नेता अशोक जैन दिलीप पटोदिया जिला पंचायत अध्यक्ष सरदार सिंह मेड़ा पूर्व विधायक वेल सिंह भूरिया मनोज सोमानी यात्रा विधानसभा प्रभारी अनिल बाबा जैन सहितशहर की विभिन्न सामाजिक संस्थाओं के प्रतिनिधि और गणमान्य नागरिकों ने भी बढ़-चढ़ कर सहभागिता की।

जोश और देशभक्ति से सराबोर भव्य तिरंगा यात्रा का आयोजन

बैतूल। 17 मई शनिवार को जिला मुख्यालय पर राष्ट्रप्रेम और उत्साह से ओतप्रोत भव्य तिरंगा यात्रा का आयोजन किया गया। इस ऐतिहासिक यात्रा की शुरुआत न्यू बैतूल ग्राउंड से की गई, जहां देशभक्ति की भावना से लबरेज जनसैलाब उमड़ पड़ा। चारों ओर ÷भारत माता की जय÷ और ÷वंदे मातरम्÷ के नारों से वातावरण गूंज उठा।

तिरंगा यात्रा में केंद्रीय राज्यमंत्री जनजातीय कार्य श्री दुर्गादास उईके, विधायक श्री हेमंत खंडेलवाल, विधायक डॉ. योगेश पंडाग्रे, विधायक श्री चंद्रशेखर देशमुख, श्री सुधाकर पवार समेत कई जनप्रतिनिधि और गणमान्य नागरिक शामिल हुए। यात्रा में स्कूली बच्चे, सामाजिक संगठन, युवा और महिलाएं भी बड़ी संख्या में भागीदार बने।

यह यात्रा न्यू बैतूल ग्राउंड से प्रारंभ होकर शहर के प्रमुख मार्गों से होती हुई दिलबहार चौक गंज पर समापन हुई। पूरे मार्ग में लोगों ने पुष्पवर्षा कर यात्रा का स्वागत किया और देशभक्ति गीतों से वातावरण को भावविभोर कर दिया। तिरंगा यात्रा न केवल एकता और अखंडता का प्रतीक बनी, बल्कि युवाओं में देशभक्ति की भावना को और प्रगाढ़ करने वाली साबित हुई। यह आयोजन राष्ट्र के प्रति सम्मान और समर्पण का जीवंत उदाहरण रहा।

जंगली सुअरों के तस्कर बोलेरो समेत गिरफ्तार चार सूअरों की मौत, पांच जिंदा मिले

बैतूल। वन विभाग ने एक बार फिर वन्यप्राणियों के अवैध शिकार और व्यापार करने वालों के खिलाफ बड़ी कार्रवाई करते हुए दो आरोपियों को रंगेहाथ पकड़ा है। 16 मई की रात्रि लगभग 1.30 बजे दक्षिण बैतूल (सामान्य) वनमंडल अंतर्गत आमला वन परिक्षेत्र के बोरदेही-दमुआ मार्ग पर बोलेरो वाहन क्रमांक एमपी 04 बीए 8159 में जंगली सुअरों को अवैध रूप से परिवहन करते हुए पकड़ा गया। वाहन की जांच करने पर उसमें 9 जंगली सुअर पाये गये, जिनके चारों पैर एवं मुंह रस्सियों से बंधे हुए थे और एक के ऊपर एक बेतरतीब ढंग से रखे गये थे। अत्यधिक दबाव और अमानवीय तरीके से रखने के कारण 4 जंगली सुअरों की मौके पर ही मृत्यु हो गई, जबकि 5 सुअर जीवित अवस्था में पाये गये। इन्हें वन विभाग की टीम ने सुरक्षित रूप से वन क्षेत्र में छोड़ा। पूछताछ करने पर

आरोपियों ने जंगली सुअरों को महाराष्ट्र से लाकर दमुआ में बेचने का मांस व्यापार करना स्वीकार किया। गिरफ्तार आरोपी अशोक पिता गोकूल बिंझाड़े, उम्र 43 वर्ष एवं किशोर पिता गोकूल बिंझाड़े, उम्र 47 वर्ष, दमुआ जिला छिन्दवाड़ा के निवासी हैं। वन विभाग ने मौके से ही वाहन को जब्त कर दोनों आरोपियों को हिरासत में लिया। उनके पास जंगली सुअरों के परिवहन से संबंधित कोई वैध दस्तावेज नहीं पाये गये। दोनों के विरुद्ध वन्य जीव संरक्षण अधिनियम 1972 की धारा 9, 39, 44, 48(क), 51, 52 के अंतर्गत वन अपराध प्रकरण पंजीबद्ध कर न्यायालयीन कार्यवाही की गई। आरोपियों के बयान दर्ज कर उन्हें माननीय न्यायालय आमला में प्रस्तुत किया गया, जहां से उन्हें जेल वारंट जारी कर उपजेल मुलताई भेजा गया। इस संपूर्ण कार्रवाई का संचालन वनसंरक्षक वनवृत्त बैतूल सुश्री बासू कनोजिया, वनमंडलाधिकारी उत्तर बैतूल नवीन गर्ग एवं वनमंडलाधिकारी दक्षिण बैतूल विजयानन्तम टी.आर. के मार्गदर्शन में किया गया। कार्यवाही को अंजाम देने में संजय साल्वे, उपवनमंडलाधिकारी मुलताई, विनोद जाखड़ प्रशिक्षु भारतीय वन सेवा अधिकारी, परिक्षेत्र अधिकारी बैतूल, आर.एस. उईके, परिक्षेत्र अधिकारी आमला, नितिन पवॉर परिक्षेत्र अधिकारी मुलताई एवं श्री नायक परिक्षेत्र अधिकारी सारणी की अहम भूमिका रही।

युद्ध परिस्थितियों में सिविलियन कैसे रहे सजग

सिविल डिफेंस प्रशिक्षण सम्पन्न, आपदा प्रबंधन की दी गई अहम जानकारी

मुलताई। मुलताई थाना अनुविभाग एवं चौकी के समस्त वालंटियरों को सिविल डिफेंस का विशेष प्रशिक्षण कार्यक्रम पंचवटी लॉन मुलताई में आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम में लगभग 200 से अधिक प्रतिभागियों ने हिस्सा लिया। प्रशिक्षण का उद्देश्य नागरिकों को आपातकालीन परिस्थितियां, जैसे प्राकृतिक आपदा, युद्ध या अन्य संकट में आत्मरक्षा एवं समाज की सुरक्षा हेतु तैयार करना था। बैतूल से पधारे एसडीआरएफ कार्यालय के अनुभवी दल ने दृश्य-प्रदर्शनों के माध्यम से समझाया कि किस प्रकार बचाव कार्य किए जाते हैं और कौन-सी सावधानियाँ आवश्यक होती हैं। इस कार्यक्रम में एसडीओ पुलिस एस.के. सिंह, थाना प्रभारी देवकरण डहरिया, एसडीएम अलका इक्का एवं एसडीआर एफ की प्लाटून कमांडर सुनीता पंद्रे विशेष रूप से उपस्थित रहीं। प्रशिक्षण में यह बताया गया कि भारत-पाकिस्तान जैसे अंतरराष्ट्रीय विवादों की गंभीरता को देखते हुए अब सिविलियनों को भी आपातकालीन परिस्थितियों के प्रति जागरूक और प्रशिक्षित करना आवश्यक हो गया है। इस दौरान कमांड की भाषा, प्रतिक्रिया की तीव्रता, और समूह समन्वय की बारीकियों पर भी विशेष प्रकाश डाला गया।

सिविल डिफेंस विशेष प्रशिक्षण के प्रमुख मुद्दे

1- ब्रेकआउट के दौरान लाइट बंद करना है पूरा अंधेरा हो जाता है जिससे हम दुश्मनों को गुमराह कर सकते हैं।

2- सीपीआई के दौरान व्यक्ति की सांस चलना बंद हो जाए तो उसे पंपिंग करके या मुंह से ऑक्सीजन देना।

3- एयर रेड सायरन एक चेतावनी अलार्म है जो दुश्मन के हवाई हमले होने की आशंका होने पर कुछ सेकंड पहले बजाया जाता है जिससे लोग सुरक्षित स्थानों पर जा सकते हैं।

प्रवेश के लिए करीब 1800 आवेदन आये, दस्तावेजों का सत्यापन भी शुरू

आरटीई : 1217 सीट के लिए आये 148 फीसदी आवेदन

बैतूल। शिक्षा का अधिकार अधिनियम (आरटीई) के तहत जिले के निजी स्कूलों में प्रवेश प्रक्रिया शुरू हो चुकी है। इस साल जिले के 291 निजी स्कूल को आरटीई में शामिल किया गया है, जिसमें इस वर्ष 1217 सीटें आवंटित की गई। इन सीटों पर प्रवेश के लिए 15 मई तक 1800 आवेदन आ चुके थे, जो निर्धारित लक्ष्य से 148 प्रतिशत है, जबकि पिछले साल आरटीई के तहत प्रथम चरण में निजी स्कूलों में 1284 बच्चों को प्रवेश दिया गया था, लेकिन दूसरे चरण में उच्च न्यायालय जबलपुर द्वारा रोक लगाने के कारण एडमिशन नहीं हो सके थे। बताया जा रहा है कि स्कूलों में सीटों का आरक्षण 25 प्रतिशत के हिसाब से राज्य शिक्षा केंद्र द्वारा निर्धारित किया है। इस हिसाब से सत्र 2025-26 के लिए जिले भर में आरटीई के तहत कुल 1217 सीटें आरक्षित की गई है। जिनमें आरटीई के तहत बच्चों को प्रवेश दिया जायेगा। यह आंकड़ा दर्ज संख्या के अनुपात से थोड़ा कम या ज्यादा हो सकता है। प्रवेश प्रक्रिया में पिछले सत्र की तुलना में कोई खास बदलाव नहीं किए गए हैं।

7 मई से सत्यापन प्रक्रिया शुरू- आगामी शिक्षण सत्र में आरटीई के तहत प्रवेश लेने के लिए आवेदन प्रक्रिया और सत्यापन की प्रक्रिया 7 मई से शुरू हो गई है। जिसमें आवेदन से लेकर स्कूल आंवटन तक की पूरी प्रक्रिया ऑनलाइन हो रही है। सत्यापन के लिए सुबह से पालक सेंटर पहुंच रहे है। वर्तमान में दस्तावेजों के सत्यापन का प्रक्रिया जारी है। साथ ही अंतिम तारीख तक सत्यापन जारी रहेगा। सेंटर पर आवेदनों की संख्या अधिक होने पर वहां शिक्षकों की ड्यूटी बढ़ाई जाएगी। समय पर ही सभी सेंटर खोलने के निर्देश दिए गए है। डीपीसी जितेन्द्र भनारिया का कहना है कि सत्यापन के दौरान किसी प्रकार की परेशानी नहीं होने दी जाएगी।

आधार अपडेट कराने में आ रही परेशानी- आरटीई में प्रवेश दिलाने पालक बच्चों के दस्तावेज तैयार करने में जुटे हैं। इस दौरान सबसे ज्यादा

परेशानी आधार कार्ड अपडेट करवाने में आ रही है। निर्धारित आधार केंद्रों पर सुबह से भीड़ लग रही है। भीषण गर्मी में दोपहर तक आधार कार्ड बनवाने बैठना पड़ रहा है। कई बच्चों के फिंगर प्रिंट मैच नहीं हो रहे हैं, जबकि अन्य तकनीकी कारणों से भी आधार कार्ड नहीं बन पा रहे हैं। यही स्थिति स्कूलों में बच्चों की बनाई जा रही आपार आईडी को लेकर भी सामने आ रही है। बताया गया कि आधार में अपडेट नहीं होने के कारण कई छात्रों की आपार आईडी अभी तक नहीं बन पाई है।

कक्षावार आयु सीमा तय- प्रवेश के लिए कक्षावार आयु सीमा भी तय की गई है। नर्सरी में न्यूनतम आयु 3 वर्ष और अधिकतम 4 वर्ष 6 माह होगी। केजी-1 में न्यूनतम आयु 4 वर्ष अधिकतम 5 वर्ष 6 माह रहेगी। केजी-2 में न्यूनतम आयु 5 वर्ष अधिकतम 6 वर्ष 6 माह तय की गई है। कक्षा-1 में न्यूनतम आयु 6 वर्ष और अधिकतम 7 वर्ष 6 माह होगी। स्कूल शिक्षा विभाग ने तय समय-सीमा में पूरी प्रक्रिया संपन्न करने के निर्देश विभागीय अधिकारियों को दिए हैं। आवेदकों को सत्यापन के लिए मूल दस्तावेज लाना जरूरी होगा। आवेदक अपने ग्राम, वार्ड और विस्तारित पड़ोस के गैर-अनुदान मान्यता प्राप्त प्राइवेट स्कूलों में पोर्टल पर प्रदर्शित स्कूलों में निःशुल्क प्रवेश के लिए आवेदन कर सकेंगे। सत्यापन के लिए मूल दस्तावेजों को निर्धारित शासकीय जन-शिक्षा केंद्र में प्रस्तुत करना अनिवार्य रहेगा।

इनका कहना है -

जिले में आरटीई के तहत 291 निजी विद्यालयों में 1217 सीटें आरक्षित की गई है। इन सीटो पर निर्धारित प्रक्रिया के अनुसार बच्चों को एडमिशन दिया जायेगा। अभी तक 1800 आवेदन आ चुके है और रोजाना ऑनलाइन आवेदन आ रहे है।

- जितेन्द्र भनारिया, डीपीसी, बैतूल

कॉलेज में 6100 सीटों के लिए प्रवेश की प्रक्रिया शुरू

बैतूल। उच्च शिक्षा विभाग ने शैक्षणिक सत्र 2025-26 के लिए ऑनलाईन एडमिशन की प्रक्रिया 15 मई से शुरू कर दी है। पीएमश्री जयंवती हाक्सर महाविद्यालय में यूजी में 3 हजार 810 और पीजी में 2 हजार 290 सीटों और कुल 6100 सीटों के लिए एडमिशन होना है। पहले चरण के एडमिशन के लिए रजिस्ट्रेशन की प्रक्रिया शुरू हो चुकी है। इस बार शिक्षा विभाग ने एडमिशन के लिए कई बदलाव

किए गए है। इस वर्ष ऑनलाईन एडमिशन के लिए ऑउटसोर्सिंग एजेंसी को जिम्मेदारी सौंपी है। नई व्यवस्था के अंतर्गत प्रत्येक कॉलेज केंपस में एजेंसी अपनी रजिस्ट्रेशन-क्योस्क शुरू करेगी। ताकि विद्यार्थियों को परेशानियों का सामना ना करना पडे। जानकारी के मुताबिक पहले चरण के एडमिशन के लिए ऑनलाईन रजिस्ट्रेशन 15 मई से शुरू हो चुके है। 30 मई तक ऑनलाईन पंजीयन के लिए आवेदन किए जाएंगे। 16 मई से 3 जून तक पंजीकृत आवेदनों का सत्यापन होगा। 5 जून से प्रथम चरण की सीट आंवटन की प्रक्रिया शुरू होगी। 5 जून से 16 जून तक आवंटित कॉलेजों में प्रवेश शुल्क का भुगतान शुरू हो जावेगा। एडमिशन प्रक्रिया में उच्च शिक्षा विभाग द्वारा जारी की गई गाईड लाईन का पालन किया जाएगा। इस बार एडमिशन प्रक्रिया में बदलाव किया है, जिसके तहत एडमिशन में अब उम्र का बंधन नहीं रहेगा। अधिक उम्र वाले व्यक्ति भी कॉलेज में एडमिशन ले सकते है। इस बार एडमिशन को लेकर जन्म प्रमाणपत्र अनिवार्य कर दिए है।

पाकिस्तानी एक्टर्स और सिंगर स्वीकार नहीं

भारत और पाकिस्तान के तनाव के बीच रईस, कपूर एंड संस और 'सनम तेरी कसम' की पाकिस्तानी एक्ट्रेस माहिरा खान, फवाद खान और मावरा होकेन को संगीत प्लेटफार्मों पर उनके हिंदी फिल्म पोस्टर से हटा दिया गया। यह कदम माहिरा, फवाद और मावरा द्वारा भारत के 'ऑपरेशन सिंदूर' के बाद भारत विरोधी टिप्पणी करने के कुछ ही दिनों बाद उठाया गया।

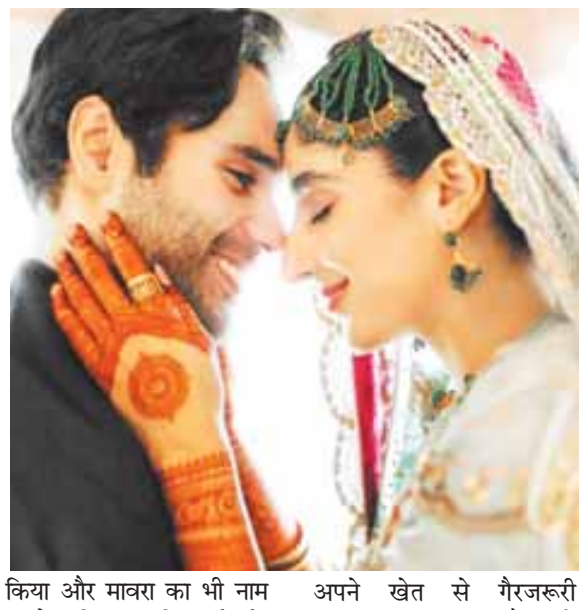

भारत में पाकिस्तानी एक्टर्स के सोशल मीडिया पर बैन लगाने के बाद, कई म्यूजिक कंपनियों ने इंडियन फिल्म एल्बम के कवर से पाक कलाकारों की फोटो हटा दी। 'सनम तेरी कसम' में जहां पहले हर्षवर्धन राणे और मावरा होकेन नजर आ रहे थे। लेकिन, अब सिर्फ एक्टर की ही फोटो दिखाई दे रही। 'स्पॉटिफाई' और यूट्यूब म्यूजिक पर फिल्म के एल्बम कवर से भी पाकिस्तानी एक्ट्रेस को हटा दिया गया है। इस मूवी के अलावा, शाहरुख खान की 'रईस' से भी माहिरा खान की फोटो गायब है। मगर अभी 'खूबसूरत' के कवर इमेज पर सोनम कपूर के साथ फवाद खान की फोटो मौजूद है।

हर्षवर्धन राणे ने हाल ही में एक पोस्ट किया था और ऐलान किया था वह 'सनम तेरी कसम 2' में मावरा होकेन के साथ काम नहीं करेंगे। उन्हें अगर मालूम होता है कि पहले पार्ट के कलाकार सीक्वल में होंगे, तो वह इसे इज्जत के साथ इनकार कर देंगे। एक्टर ने ये फैसला इसलिए लिया, क्योंकि एक्ट्रेस ने 'ऑपरेशन सिंदूर' की निंदा की थी। हालांकि इसके बाद दोनों ने सोशल मीडिया को एक-दूसरे को काफी कुछ कहा था।

पहलगाम में हुए आतंकी हमले के बाद भारत ने कार्रवाई करते हुए 'ऑपरेशन सिंदूर' के तहत पाकिस्तान पर एयरस्ट्राइक की थी। 9 आतंकी ठिकानों को तबाह कर दिया था। जिस पर पाकिस्तानी कलाकारों ने रिएक्ट किया और मावरा का भी नाम उसमें शामिल था। फिर हर्षवर्धन ने फैसला लिया कि वह मूवी में काम नहीं करेंगे तो बात बढ़ गई। एक्ट्रेस ने इंस्टाग्राम पर एक्टर के इस फैसले को पीआर स्टंट बताया था। उन्होंने लिखा था 'जिस इंसान से मुझे कॉमन सेंस की उम्मीद थी, वह ध्यान खींचने के लिए पीआर स्टेटमेंट दे रहा है। अफसोस की बात है।'

मावरा ने कहा था कि एक्टर अगर 9 साल बाद उनके नाम का इस्तेमाल करके सुर्खियां बटोर रहे हैं तो उनके पास गलत टीम है। उन्होंने युद्ध के बारे में भी बात की थी और एक्टर को सुनाया था। फिर हर्षवर्धन ने इंस्टाग्राम स्टोरी में नोट लिखा और कहा ये पर्सनल अटैक लग रहा है। वह खुद पर तो सबकुछ बर्दाश्त कर सकेत हैं लेकिन देश के लिए नहीं। उन्होंने किसान का हवाला देते हुए कहा था कि वह अपने खेत से गैरजरूरी खरपतवार निकालता है। उसे इसके लिए किसी पीआर टीम की जरूरत नहीं होती। इसे कॉमन सेंस कहते हैं। 'मैंने बस पार्ट 2 में न होने का कहा था। मेरे पास उन लोगों के साथ काम न करने का पूरा अधिकार है, जो मेरे देश के कामों को कायरतापूर्ण कहते हैं।'

अब जब 'सनम तेरी कसम' के एल्बम कवर से मावरा होंगे की फोटो हटाई गई तो हर्षवर्धन राणे ने फिर से रिएक्ट किया है। उन्होंने बातचीत में कहा कि अब वो कहेंगे कि इसे मेरी पीआर टीम ने करवाया है। नहीं, ये फिर से कॉमन सेंस के बारे में ही है। खरपतवार हटाए जा रहे हैं। फिल्म प्रोड्यूसर ने भी इस खबर पर रिएक्ट किया और पोर्टल से कहा कि उन्होंने मुझसे नहीं पूछा था। ये उनका फैसला है। हमारी सरकार जो कुछ भी कहेगी। हमें वो फॉलो करना होगा।

फिल्म 'सनम तेरी कसम' 9 साल बाद दोबारा थिएटर्स में रिलीज हुई थी। इस फिल्म ने बॉक्स ऑफिस पर 500 करोड़ से ज्यादा का बॉक्स ऑफिस कलेक्शन किया था। इसके गाने और कहानी ने एक बार फिर से दर्शकों को अपना दीवना बना दिया था। हर्षवर्धन राणे और मावरा होकेन अहम भूमिका में थे और इनके बीच की केमेस्ट्री ने आग लगा दी थी। मगर अब ये शायद पार्ट-2 में देखने को नहीं मिलेगी।

रियल बॉक्स

परदे पर मां के कभी न भूलने वाले किरदार

हेमंत पाल

लेखक 'सुबह सवेरे' इंदौर के स्थानीय संपादक है।

फिल्मों के कई तरह के किरदार होते हैं। नायक और नायिका के अलावा खलनायक, कॉमेडियम और कुछ कैरेक्टर एक्टरों की भी भूमिका होती है। ज्यादातर फिल्मों में एक और महत्वपूर्ण किरदार होता है मां का। फिल्म में पिता हो या नहीं, मां जरूर होती है। असल जीवन में ही नहीं, फिल्मी परदे पर भी मां कथानक का अहम हिस्सा है। किरदार अंदाज चाहे जो भी रहा हो, सभी ऑनस्क्रीन मां ने हमेशा दर्शकों पर अपनी अलग छाप छोड़ी। कई बार तो ऐसी फिल्मों में मां के किरदारों ने ही सबसे ज्यादा प्रभावित किया। फिल्मकारों ने मां के अर्थ को बेहतर तरीके से किरदार में उतारने में कोई कसर नहीं छोड़ी। हिंदी फिल्में पिता के बिना पूरी हो जाएं, पर मां के किरदार के बगैर कम ही पूरी होती है। मां के किरदार को फिल्मों में अलग-अलग तरह से पेश किया गया।

कुछ अभिनेत्रियों ने मां के किरदार को इतनी बखूबी से निभाया कि परदे पर मां की बात हो, तो इनकी ही छवि उभरती है। यही मां फिल्म में कई बार कहानी में मोड़ लाने का भी काम करती है। याद करें तो मदर इंडिया, दीवार और 'वास्तव' ऐसी ही फ़िल्में हैं, जिन्हें मां की भूमिका के लिए ही याद किया जाता है। सिर्फ यही नहीं, ऐसी फिल्मों की फेहरिस्त बहुत लंबी है, जिनके कथानक में मां का किरदार कई बार नायक-नायिका से ज्यादा प्रभावशाली रहा। मां के कई यादगार किरदार है, जिनमें निरूपा रॉय, वहीदा रहमान, नरगिस, रीमा लागू, राखी, फरीदा जलाल और रेखा हैं। ये अभिनेत्रियां अपने अभिनय के लिए जानी जाती हैं। इनके अलावा दुर्गा खोटे ने भी ऑनस्क्रीन मां के रूप में अपनी अलग पहचान बनाई। उन्होंने कई फिल्मों में मां का संवेदनशील किरदार निभाकर दर्शकों को प्रभावित किया फिल्मकारों ने मां के सशक्त किरदारों को अपनी फिल्मों में बखूबी तरीके से पेश किया। कई बार ऐसा भी हुआ कि मां के किरदार से ही फिल्में दर्शकों को आकर्षित करने में सफल रही हैं। कभी मां को समर्पित, कभी सकारात्मक, कभी संघर्षशील तो कभी दोस्ताना रूप में सिल्वर स्क्रीन पर इस किरदार को प्रस्तुत किया गया।

'मदर इंडिया' में नरगिस ने राधा का किरदार निभाया, जो एक मां है और अपने दोनों बेटों को बेहतर जीवन देने के लिए संघर्ष करती है। 'दीवार' में निरूपा रॉय ने एक ऐसी माँ का किरदार निभाया जो अपने बेटों के लिए सब कुछ करती है, पर एक बेटा रास्ता भटक जाता है। रीमा लागू ने भी ऐसी ही भूमिका 'वास्तव' में निभाई थी। वर्ष 1957 में आयी फिल्म 'मदर इंडिया' में नरगिस की भूमिका का आज भी उल्लेख किया जाता है। फिल्म में नरगिस ने सुनील दत्त और राजेन्द्र कुमार की मां की भूमिका को जीवंत किया था। उन्होंने ऐसी मां का किरदार निभाया, जिसके हाथ अपने बेटे के अन्याय करने पर उसे जान से मारने से भी नहीं हिचकते। इस भूमिका के लिए नरगिस को सर्वश्रेष्ठ अभिनेत्री के फिल्मफेयर पुरस्कार से सम्मानित किया गया था।

ऐसे ही जब सिनेमा में मां के किरदार का जिक्र होता है, तो निरूपा राय के नाम को भुलाया नहीं जा सकता। उन्हें फिल्मों की आदर्श मां माना जाता है। उन्हें अमिताभ बच्चन की ऑनस्क्रीन मां भी कहा जाता है। क्योंकि, उन्होंने कई फिल्मों में अमिताभ की मां की भूमिका निभाई। दीवार, खून पसीना, मुकद्दर का सिकंदर, अमर अकबर एंथनी और 'सुहाग' जैसी फिल्मों में अमिताभ की मां का रोल निभाया। रेखा जैसी रोमांटिक अभिनेत्री ने भी कई फिल्मों में मां की भूमिका निभाई है, इनमें मुस्कुराहट, कोई मिल गया और 'सत्य और प्रेम' जैसी फिल्में शामिल हैं। फिल्मों में अभिनय करने वाली पहली मिस इंडिया नूतन ने भी कई फिल्मों में मां की भूमिका की। इनमें मेरी जंग, नाम, मुजरिम, युद्ध और 'कर्मा' जैसी फिल्में उल्लेखनीय हैं। 'मेरी जंग' में अपने सशक्त अभिनय के लिए नूतन को सर्वश्रेष्ठ सहायक अभिनेत्री के पुरस्कार से सम्मानित किया गया था।

जानी-मानी अभिनेत्री राखी ने भी कई फिल्मों में मां के चरित्र को साकार किया। यदि निरूपा रॉय को अमिताभ की मां कहा जाता है, तो राखी अनिल कपूर की फिल्मी मां थी। राम लखन, प्रतिकार, जीवन एक संघर्ष में राखी अनिल कपूर की मां बनी थीं। खलनायक, सोल्जर, बार्डर, करण-अर्जुन, बाजीगर और 'अनाड़ी' जैसी फिल्मों में राखी ने मां का किरदार निभाया। 'करण-अर्जुन' फिल्म में उनके मां के किरदार को लोग आज भी याद करते हैं। फिल्म में दुर्गा सिंह का किरदार निभाकर उन्होंने एक मां के अटूट विश्वास को पेश किया था। मां जिसे विश्वास होता है कि उसके बच्चे अपने पिता के हत्यारे से बदला लेने जरूर आएंगे। इन अभिनेत्रियों के अलावा 90 के दशक में रीमा लागू ने कई फिल्मों में इस किरदार को प्रभावशाली तरीके से पेश किया। इनमें रीमा लागू भी है, जिन्हें सलमान खान की मां के रूप में देखा गया है। इनमें मैने प्यार किया, साजन, हम साथ साथ हैं, जुड़वां' और 'पत्थर के फूल' जैसी सुपरहिट फिल्में शामिल हैं। उनकी मां की भूमिका वाली अन्य फिल्मों में कयामत से कयामत तक, आशिकी, हम आपके हैं कौन, कुछ कुछ होता है आदि शामिल हैं।

अचला सचदेव ने अपने करियर में कई फिल्मों मां और दादी का किरदार निभाया है। उन्हें इन्हीं किरदारों ने एक अलग पहचान दिलाई थी। उन्होंने 'कभी खुशी कभी गम' में शाहरुख खान और ऋतिक रोशन की दादी और 'दिल वाले दुल्हनिया ले जाएंगे' में काजोल की दादी का किरदार निभाते हुए भी देखा गया। दुर्गा खोटे ने जिस दौर में सिनेमा में कदम रखा, तब महिलाओं के किरदार भी पुरुष निभाया करते थे। दुर्गा खोटे ने कई फिल्मों में मां का किरदार निभाकर अपनी एक अलग पहचान बनाई। कई फिल्मों में प्यार और दुलार से भरपूर मां का किरदार निभाया। ऋषि कपूर की फिल्म 'कर्ज' में इन्होंने मां का किरादर निभाकर उसे यादगार बना दिया। 'दिलवाले दुल्हनिया ले जाएंगे' में काजोल की मां को याद किया जाए तो फरीदा जलाल आ जाती है। उन्होंने कई फिल्मों में कभी भावुक तो कभी हंसमुख और मजाकिया मां का किरदार निभाया है। कुछ कुछ होता है', 'कभी खुशी कभी गम', 'कहो ना प्यार है', जैसी कई फिल्मों में मां का किरदार निभाकर लोगों का दिल जीता है।

चुलबुली नायिका की भूमिका निभाने से लेकर मां तक का किरदार निभाने में जया बच्चन का कोई सानी नहीं। उन्होंने 'हजार चौरासी की मां' में एक ऐसी मां का किरदार निभाया, जिसके बेटे को नक्सलियों ने मार दिया है। इसके बाद वह फिल्म 'कभी खुशी कभी गम' और 'कल हो ना हो' में भी मां का किरदार निभाती नजर आई। 'कल हो ना हो' के लिए जया बच्चन को फिल्म फेयर अवार्ड भी मिला। मल्टीपर्पस रोल में किरण खेर ने भी कई भूमिकाएं निभाई। साथ ही मां की इमेज को बदलने में अहम भूमिका निभाई। फिल्म 'दोस्ताना' की कूल मदर हो या 'देवदास' की कठोर, स्वाभिमानी मां, किरण खेर ने हर भूमिका को जीवंत किया है। 'हम तुम' में उन्होंने एक ऐसी मां का किरदार निभाया, जो दोस्त से कम नहीं है। फिल्मों में कई अभिनेत्रियों ने मां के किरदार को रूपहले पर्दे पर निभाया। इनमें लीला चिटनिस, दुर्गा खोटे, दीना पाठक, वहीदा रहमान, आशा पारेख, हेमा मालिनी, रेखा, जया भादुड़ी, डिंपल कपाड़िया, रति अग्निहोत्री, किरण खेर और रेखा शामिल हैं।

- hemantpal60@gmail.com/ 9755499919

बुरा लगता है कि गोविंदा जैसा एक्टर बैठा

गोविंदा की पत्नी सुनीता आहूज ने पति को फिल्मों में देखने की चाहत को लेकर दिल की बातें बाहर निकाली। गोविंदा 1990 के दशक में एक बड़े स्टार होने के बावजूद लंबे समय तक फिल्मों से दूरी बनाए रखी, जिससे उनका परिवार भी चिंतित है। हाल ही में एक इंटरव्यू में सुनीता ने गोविंदा को बड़े परदे पर वापस देखने की परिवार की इच्छा के बारे में खुलकर बात की और बताया कि उन्होंने ओटीटी स्पेस में अवसरों को क्यों अस्वीकार कर दिया।

सुनीता आहूजा ने कहा कि मैं हमेशा गोविंदा से कहती हूं कि आप एक लीजेंड स्टार हैं, आप 90 के दशक के राजा थे। आज की पीढ़ी के बच्चे आपके गानों पर नाचते हैं। मैं उनसे बेहतर कंपनी रखने के लिए कहती रहती हूं। आप जैसे लीजेंड घर पर क्यों बैठे हैं? आपकी उम्र के एक्टर बहुत काम कर रहे हैं, जिनमें अनिल कपूर, सुनील शेट्टी और जैकी श्रॉफ शामिल हैं। आप काम क्यों नहीं करते? हम गोविंदा को फिल्मों में

देखना मिस करते हैं।

उन्होंने कहा कि मेरे बच्चे और मैं उन्हें स्क्रीन पर देखने के लिए बेताब हैं। आप जिस कंपनी और दोस्तों के साथ घूम रहे हैं, वे आपके लिए अच्छा नहीं कह रहे हैं, बस हां में हां मिलाते हैं, उनका इरादा उनके लिए अच्छा नहीं है। मैं उनके इन सो-कॉल्ड दोस्तों से कहना चाहती हूं कि गोविंदा आपकी फाइनैंशियल मदद भी करते हैं, आप उन्हें सही रास्ता क्यों नहीं दिखाते!

यह भी कहा कि गोविंदा बदलते समय को स्वीकार करने को तैयार नहीं हैं और 1990 के दशक में अटके हुए हैं, जब उनकी ज्यादातर फिल्में बॉक्स ऑफिस पर हिट रहीं। उन्होंने कहा कि 90 का दशक चला गया, अब 2025 है। 90 के दशक की स्टाइल की फिल्म कोई नहीं देख रहा। उसकी जिंदगी बर्बाद क्यों कर रहे हो दो कौड़ी के पैसे के लिए? उससे कहो कि वजन कम करे या हैंडसम दिखे। हमें बुरा लगता है कि इतना दिग्गज एक्टर घर पर बैठा है। फिल्म इंडस्ट्री में कलाकारों को अपनी वाह-वाही सुनना अच्छा लगता है, वे सच नहीं सुनना चाहते। 90 के दशक में वाह-वाही थी, गोविंदा जैसा कोई एक्टर नहीं है, लेकिन उन्हें अच्छी फिल्में करनी हैं और अच्छे डायरेक्टर का चयन करना है।'

जब फिल्म बनते-बनते बदल गए नायक

अशोक जोशी

राजनीति और क्रिकेट में अक्सर ऐसा होता रहता है कि टीम के खिलाड़ियों को आखिरी समय में बदल दिया जाता है। कभी किसी नेता या खिलाड़ी को अचानक हटा दिया जाता है और उसकी जगह दूसरे नेता या खिलाड़ी को टीम में जगह दे दी जाती है। फिल्मों का भी

यही आलम है। यहां भी फिल्मों में एक नायक को बदलकर दूसरे नायक को चुनने की घटनाएं अक्सर हुआ करती है। ऐसा कई बार हुआ, जब किसी फिल्म की घोषणा करते समय किसी नायक के नाम की घोषणा की जाती है, तो जब फिल्म परदे पर आती है तो उसका नायक बदल जाता है।

फिल्मों में तब तक बदलाव होता रहता है, जब तक उसका 'द एंड' नहीं आ जाता। कभी कभी तो फिल्म की आठ-दस रीलें बन जाने के बाद नायक बदल दिए जाते हैं। ऐसा भी कई बार हुआ कि किसी फिल्म के लिए निर्माता एक नायक के पास पहुंचता है और उसके इंकार करने पर फिल्में दूसरे नायक की झोली में चली जाती है। नायक के बदलने की परम्परा चलती रहती है। कभी कभी तो ऐसा होता है कि किसी नायक को खलनायक बना दिया जाता है और खलनायक को नायक। ऐसा भी संयोग हुआ कि कोई दो नायक एक फिल्म में नायक और खलनायक बनकर आए हैं तो दूसरी किसी फिल्म में उनकी भूमिकाएं बदल दी गई। जो पहले नायक था, वह खलनायक बन गया और जो पहले खलनायक था वह नायक बनकर परदे की शान बढाता है।

ऐसा नहीं है कि नायक बदलने का दस्तूर नया है। हिंदी फिल्मों में यह कारनामा तब से दोहराया जा रहा है, जब से फिल्मों ने अपनी विकास यात्रा आरंभ की थी। कम लोगों को जानकारी होगी कि के आसिफ की भव्यतम ऐतिहासिक फिल्म 'मुगले आजम' में भी नायकों की हेराफेरी का सिलसिला चला था। पहले इस फिल्म में पृथ्वीराज कपूर के साथ चन्द्रमोहन नायक थे, और नायिका थी नसीम बानो। लेकिन, चन्द्रमोहन के मरने से हालात इतने बदले कि आसिफ को लम्बे समय तक 'मुगले आजम' को लटकाए रखना पड़ा। जब इसे दोबारा बनाने का फैसला हुआ तो चन्द्रमोहन की जगह दिलीप कुमार और नसीम बानो की जगह मधुबाला को नायक-नायिका बनने का सौभाग्य मिला।

देव आनंद और शम्मी कपूर के साथ भी नायक बदलने की कहानी बार-बार दोहराई गई। जब शम्मी कपूर को हर फिल्म में लेने वाले नासिर हुसैन ने अपनी पहली फिल्म 'जब प्यार किसी से होता है' का निर्माण किया, तो उसमें शम्मी कपूर को बदलकर देव आनंद को लिया गया। लेकिन, बात यही खत्म नहीं हुई। उसी दौरान देव आनंद के खासमखास निर्माता निर्देशक एस मुखर्जी ने अपनी फिल्म 'जंगली' को 'मिस्टर हिटलर' के नाम से बनाने की योजना बनाई तब देव आनंद ही उसके नायक थे। लेकिन, देव आनंद ने जब शम्मी कपूर की फिल्म 'जब प्यार किसी से होता है' स्वीकार की, तो मिस्टर हिटलर छोड दी जो शम्मी कपूर को मिली।

देव आनंद और शम्मी कपूर के बीच इस तरह अदला बदली का खेल आगे भी जारी रहा। जब नासिर हुसैन ने विजय आनंद के निर्देशन में 'तीसरी मंजिल' की घोषणा की, तो इसके नायक देव आनंद थे।

लेकिन, देव आनंद और नासिर हुसैन के बीच एक पार्टी में कहासुनी इतनी बढी कि देव आनंद ने सरेआम घोषणा कर दी थी कि वह इस घटिया आदमी के साथ जिंदगी में कभी काम नहीं करेंगे। तब उस घटिया आदमी ने देव आनंद के बदले शम्मी कपूर को 'तीसरी मंजिल' में चुना। लेकिन, शम्मी कपूर ने देव आनंद से इजाजत लेकर ही फिल्म में काम करना स्वीकार किया। कई बार ऐसा भी होता है कि एक कलाकार के फिल्म छोड़ने से वह फिल्म दूसरे कलाकार को मिल जाती है और वह फिल्म उसकी किस्मत ही बदल देती है। यह करिश्मा अमिताभ बच्चन के साथ भी हुआ। एक जमाना था, जब उन्हें 'बाबुल की गलियां' में नायक के तौर पर लिया गया। लेकिन फिल्म की सात-आठ रीलें और कई गाने फिल्माए जाने के बाद उन्हें हटाकर संजय खान को नायक बनाया गया।

इसी तरह अमिताभ को भी दूसरे नायक की फिल्म स्वीकारने का मौका मिला और यह मौका भी उन्हें देव आनंद की बदौलत ही मिला। जब प्रकाश मेहरा ने 'जंजीर' बनाने का फैसला किया, तो इसके अधिकर धर्मेन्द्र के पास थे। लेकिन, व्यस्तता के कारण धर्मेन्द्र यह फिल्म नहीं कर पाए। तब यह फिल्म राजकुमार के पास पहुंची। लेकिन राजकुमार ने इस फिल्म को अजीबो-गरीब कारण से करने से इंकार कर दिया। उन्हें प्रकाश मेहरा के बालों से चमेली के तेल की

बदबू आती थी। तब यह फिल्म देव आनंद को मिली। उन्हें कहानी पसंद भी आई। बस एक बात पर बात आगे नहीं बढ़ सकी कि फिल्म में नायक पर एक भी गाने की सिचुएशन नहीं थी। तब देव आनंद से छिटक कर 'जंजीर' अमिताभ की झोली में जा गिरी। इसकी सफलता ने अमिताभ की असफलता की जंजीर को तोड दिया।

अपनी सनक के चलते राजकुमार ने कई फिल्में छोड़ी, उनमें राजकपूर की 'मेरा नाम जोकर' भी एक है। इसमें राजकपूर उन्हें सर्कस के मैनेजर की भूमिका देना चाहते थे, जिसे उन्होंने ये कहकर ठुकरा दिया कि वह एक्स्ट्रा रोल नहीं करना चाहते। बाद में कुछ संशोधन के साथ यह भूमिका धर्मेन्द्र को मिली। लेकिन, राज कपूर ने कहता है जोकर गाने के एक शॉट में राजकुमार के डुप्लीकेट को दिखाकर बताया कि एक्स्ट्रा भी राजकुमार की तरह होते हैं।

देव आनंद ऐसे कलाकार है जिनकी छोड़ी फिल्मों ने कई सितारो की किस्मत के दरवाजे खोल दिए। 1961 में रमेश सहगल ने 'शोला और शबनम' के लिए देव आनंद को चुना था। फिल्म की कहानी सुनाने के लिए उन्होने देव आनंद को बुलाया। उन्होंने कहानी सुनी, जो उन्हें एक गमगीन फिल्म की तरह लगी। उन्होंने कहा कि मैं यह फिल्म नहीं कर पाउंगा, लेकिन आपके ऑफिस के बाहर लाइन में एक नौजवान खड़ा

है, वह जरूर इसके लिए फिट रहेगा। वह नौजवान और कोई नहीं बल्कि धर्मेन्द्र था। 'जिस देश में गंगा बहती है' के लेखक अर्जुन देव रश्क इस कहानी लेकर देव आनंद के पास गए थे। उन्हे कहानी तो अच्छी लगी, लेकिन उन्हें नायक की भूमिका अपने लायक नहीं लगी तो उन्होंने राज कपूर को फोन लगाया और अर्जुन देव रश्क को राज कपूर के पास भिजवा दिया। बाद में यह फिल्म राज कपूर के साथ जबरदस्त हिट हुई।

'ज्वैलथीफ' में भी नायकों के बदलने की रोचक घटना हुई। फिल्म के टाइटल रोल के लिए पहले राजकुमार को चुना गया। राजकुमार और विजय आनंद के बहुत गहरे संबंध थे, इसलिए वे 'ज्वेल थीफ' के लिए इंकार भी नहीं कर सकते थे। लेकिन, वे जानते थे कि पूरी फिल्म में कैमरा देवआनंद पर ही रहेगा। विजय आनंद यह बात भांप गए। उन्होंने राजकुमार को कहा किया कि मैं तुम्हें फोन नहीं करूंगा। यदि तुम्हें यह फिल्म करना हो, तो खुद फोन करना वर्ना मैं समझूंगा कि तुम्हें काम नहीं करना है। विजय आनंद ने राजकुमार के फोन का एक सप्ताह इंतजार किया। जब जवाब नहीं आया, तो इस रोल के लिए अशोक कुमार को चुना गया उन्होंने 'ज्वैलथीफ' में अंडर प्ले कर फिल्म में प्राण फूंक दिए थे।

'संगम' और 'प्यासा' जैसी फिल्मों के लिए भी नायक बदलने का सिलसिला दोहराया गया। 'संगम' को दिलीप कुमार ने इसलिए मना कर दिया, क्योंकि यह उन्हें अपनी फिल्म 'अंदाज' का रिमेक लगा। देव आनंद ने इसलिए इंकार कर दिया, क्योंकि वे राजेन्द्र कुमार की बजाए राजकपूर वाली भूमिका निभाना चाहते थे। उनका कहना था कि उनके प्रशंसक उन्हें मरते नहीं देखना चाहते हैं। इसके बाद यह फिल्म राजेन्द्र कुमार को मिली। 'प्यासा' में भी दिलीप कुमार ही पहली पसंद थे। लेकिन, लगातार गंभीर फिल्म करते हुए दिलीप कुमार डिप्रेशन के शिकार हो गए। उनके मनोचिकित्सक ने उन्हें 'प्यासा' न करने की सलाह दी। लिहाजा दिलीप कुमार वाली यह फिल्म खुद गुरूदत्त को करना पड़ी। बाद में दिलीप कुमार ने कई बार 'प्यासा' न कर पाने का अफसोस जाहिर किया।

गुरूदत्त अपनी फिल्म 'बहारें फिर आएंगी' के नायक थे। फिल्म का क्लाइमेक्स बचा था कि उनकी मौत हो गई। इसके बाद 'बहारें फिर भी आएंगी' बनी जरूर लेकिन उसके नायक बदलकर धर्मेन्द्र हो गए। गुरूदत्त की मौत से नायक बदलने का असर दो फिल्मों पर पड़ा। 'बहारें फिर भी आएंगी' के अलावा गुरूदत्त के आसिफ की फिल्म 'लव एंड गॉड' भी कर रहे थे। इसका भी क्लाइमेक्स फिल्माया जाना था और गुरुदत्त चल बसे। उनके बाद संजीव कुमार 'लव एंड गॉड' के नायक बने। बहुचर्चित फिल्म 'शोले' में भी अमिताभ बच्चन का रोल शत्रुघ्न सिन्हा को मिला था, पर वे मरने को तैयार नहीं हुए! गब्बर की भूमिका भी अमजद खान से पहले डैनी को मिलने वाली थी, पर वे भी मुकर गए।

काम के बोझ की मारी, पुलिस बेचारी !

प्रकाश पुरोहित

मौहर पुलिस थाने पर यह ब्रह्म-वाक्य लिखा रहता है 'देशभक्ति-जन सेवा।' अब यह गलती लोगों की है कि इसे एक साथ पढ़ जाते हैं और उम्मीद से हो जाते हैं, जबकि असल आशय तो 'देशभक्ति मायनस जनसेवा' होता है। देशभक्ति से मतलब सरकार है, जबकि यहां भी गलत समझ लेते हैं और देश में खुद को भी शामिल कर लेते हैं। जब जनसेवा मायनस ही हो गई है तो फिर पुलिस के बारे में शिकायत नहीं होनी चाहिए।

लोग उम्मीद करते हैं कि चोरी से पहले ही चोर को पुलिस पकड़ लेगी।

सोचिए, यदि ऐसा होने लगा तो फिर पुलिस के पास ट्रैफिक चालान बनाने के और क्या काम रह जाएगा। हर बात का अपना तरीका होता है और पुलिस उसी हिसाब से काम करती है, जैसे कुछ अपराध है, जो पुलिस पहले से पकड़ लेती है। जब थाने पर यह आरोप लगता है कि अपराध बढ़ रहे हैं तो फिर उन अपराधियों को पुलिस फौरन पकड़ लेती है, जो किसी पुल के नीचे बैठ कर बैंक या किसी का घर लूटने का प्लान तैयार कर रहे होते हैं।

किसी कॉमेडियन के शो से नाराज दल यदि धमकी देता है कि शो किया तो फोड़ देंगे, तो ऐसे में पुलिस की तत्परता देखते ही बनती है। धमकी देने वाले की बजाय स्टैंड-अप कॉमेडियन से कहा जाता है कि वह शो नहीं करे। अगर तोड़फोड़ करने वाले आ गए तो हम कुछ नहीं कर पाएंगे। यहां पुलिस की समझदारी को दाद देने का मन होने लगता है कि क्या गजब की तरकीब भिड़ाई है। सोचिए तोड़फोड़ करने वाले तो ना जाने कितने होंगे और ना जाने कहां-कहां होंगे। क्या मालूम कोई मंत्री का भतीजा या साला ही निकल आए। ऐसे में आसानी इसी में रहती है कि अकेले कॉमेडियन को थाने बुलाकर हिंदी में समझा दिया जाए।

जो लोग पुलिस पर अपराध नहीं रोक पाने का आरोप लगाते हैं कि उनका भी मुंह बंद हो जाता है कि देखो तोड़फोड़ हो सकती थी, पुलिस की सतर्कता से रोक दी गई। यह दूरदृष्टि का बेहतरीन नमूना है। देखिए, अगर शिवसेना ने पहले से धमका दिया होता तो होटल या क्लब में तोड़फोड़ तो नहीं होती। इसमें गलती कॉमेडियन ही नहीं, उस होटल की भी है कि पहले से पुलिस को सूचित करना चाहिए था। अब यह बात तो सच है कि पुलिस को जोक की समझ कैसे हो सकती है, लेकिन यह तो बताया ही जाना चाहिए था कि इसमें डिप्टी सीएम का नाम शामिल नहीं है, लेकिन निशाने पर वही हैं।

गलती हमारी है कि हम हर मामले में पुलिस से ही समझने की उम्मीद करते हैं। हर अधिकारी तो परसाई या शरद जोशी को पढ़ कर आया नहीं है, तो बेचारे कैसे समझ सकते हैं कि चुटकुला किस की तरफ इशारा कर रहा है। फिर यह भी तो पुलिस के लिए अनिवार्य नहीं है कि हिंदी साहित्य में एमए को यह नौकरी दी जाएगी। यह भी खतरा है कि यह शर्त रख दी जाए तो पुलिस में नौकरी करने के बजाय कॉलेज में मास्टर नहीं हो जाएगा या साहित्यकार होने का मोह कैसे छोड़ पाएगा।

ऐसा भी नहीं है कि पुलिस में साहित्यकार या लेखक नहीं हुए हैं, लेकिन तब उनका रुझान अपराध निपटाने से ज्यादा उपन्यास पूरा करने में होता है। तब पुलिस थाना भी पुस्तकालय की तरह लगता और सिपाही नवलेखक। चोर-उचक्कों की जगह थाने में कवि या लेखक ही ज्यादा पाए जाते हैं। थाने की आतंकी गरिमा जाती रहती है, तब रिश्वत के बदले थानेदार का रचना पाठ सुनना अनिवार्य हो जाता है।

देशभक्ति यानी सरकार की जैसी मंशा हो, वैसा किया जाए और माइनस...... जनसेवा का अर्थ तो बताने की जरूरत ही नहीं है कि इस बात से अपना क्या लेना देना! जनता को एफआइआर की बड़ी पड़ी रहती है। कुछ हुआ नहीं कि एफआईआर लिख लीजिए। पुलिस के पास इतनी ही फुर्सत होती तो अपराधी नहीं पकड़ती। दरअसल हम पुलिस पर उम्मीद का इतना बोझ डाल देते हैं कि इस वजन तले कुछ कर ही नहीं पाती है।

जब तक ज़िंदा हो, जो अच्छा लगे करते रहो

और क्या कह रही है ज़िंदगी

ममता तिवारी

लेखिका साहित्यकार हैं।

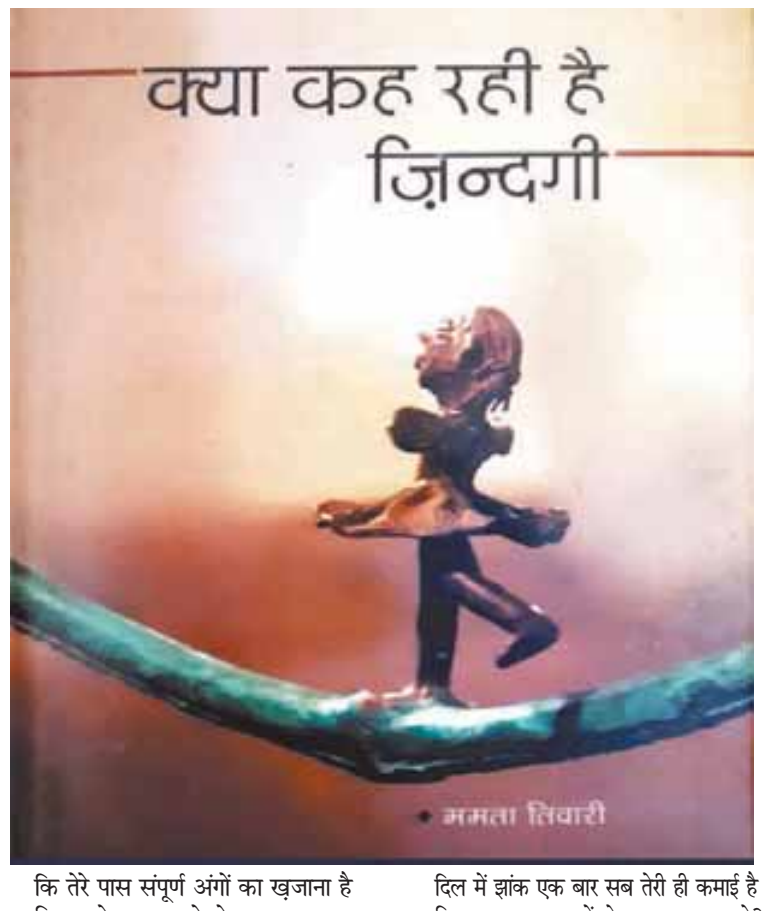

ये कैसा सवाल है जो जीते हैं, भोजन करते हैं, दूसरों के लिये जज़्मेंटल होते है, झगड़ा करते हैं, प्यार भी करते हैं, सोते हैं, जागते हैं, सुबह भागते हुये काम पर जाते हैं, रात में टी.वी. देखते और सो जाते हैं। फिर कई बार अकेले लेटे हुये सोचते हैं हम क्यों जी रहे हैं, कहाँ और किससे भाग रहे हैं? चलो सब छोड़ के कहीं दूर पहाड़ों पर निकल जाए।

जरा ठहरिये। सोचिये, ज़िंदगी चीख-चीख के कुछ कह रही है अगर ये विचार आपके मन में आ रहा है तो अवसाद में जाने की प्रथम सीढ़ी खुल चुकी है। वक्त है संभल जाएं। चलिए, थोड़ा हिसाब किताब कर के देखे क्या वास्तव में हमने जीवन जीया।

ख़फ़ा ख़फ़ा से क्यों हो आजकल खुद से
जी क्यों नहीं बहलता तुम्हारा किसी शय से
जी रहे हो गोया सांसें चल रही है
चल रहे हो गोया ज़िंदा हो तुम
तुम्हें कोई इंसा अच्छा नहीं लगता
सुबह की धूप, नीला आसमां, तुम्हारे
दिल को रौशन नहीं करता
चांद, सितारों के झुरमुट से भी
तुम्हें ठंडक पड़ती नहीं
किसी खूबसूरत चीज पर तुम्हारी
नज़र ठहरती नहीं
ख़फ़ा ख़फ़ा से क्यों हो आजकल खुद से
क्या तुम ढूंढ रहे हो ज़िंदगी
सिक्कों की खनक में
गाड़ी, बंगले और मदिरा की महक में
तय कर लिया क्या तुमने
यही सुख का पैमाना है
अरे! पागल धन दौलत को आना जाना है
मन को तो सुकून किसी और से पाना है
कमबख़्त
कभी मुहब्बत को आज़मा के देखा है
किसी दिव्यांग को सीढ़ी चढ़ते देखा है
भूख से बिलखते को डस्टबिन से
रोटी निकालते देखा है
काश! डालते उधर नज़र
शुक्रगुजार होते खुदा का
कि तेरे पास संपूर्ण अंगों का ख़जाना है
फिर चाहे ऊपर वाले से या
आशिक से लौ लगा
तेरे हिस्से सुकून ही आना है
ख़फ़ा ख़फ़ा क्यों हो आजकल खुद से
तेरे सिमा ये दुनिया तेरी ही बसाई है
फिर अब क्यों लगती पराई है
यही वो तेरे अपने है, जिनपे तू कभी
जान छिड़कता था
यही वो है जिसके इश्क में
तू आहे भरता था
पर आज तेरे जेहन पे उदासी सी क्यों छाई है
साथ नहीं छोड़ा जिसने वो तेरी परछाई है
दुनिया की हर शै तेरे आगे सर झुकाई है
दिल में झांक एक बार सब तेरी ही कमाई है
फिर ख़फ़ा ख़फ़ा क्यों हो आजकल खुद से?

अब शायद जीवित रहने का अर्थ समझ आया वो जीवन जो पेट भरने के लिये भौतिक वस्तुओं को एकत्र करने के लिए जिया क्या हम उसे जीना मान लेंगे, हमने क्या वो किया जो हमने बचपन में सोचा था कि बड़े होकर हम ऐसा करेंगे, हाँ हम दोस्तों से मिलते हैं पार्टी करते हैं, पर क्या हम ऐसी पार्टी करते है जिसमें हमारे बच्चे, माता पिता भी शामिल हों या हम बच्चों की पार्टी में उनके साथ शामिल हो।

आज ज़िंदगी के इस मुकाम पर खड़े होकर सोचती है पलट के देखती हूँ तो सोचती हूँ अभी तक जो जिया था वो जिम्मेदारियों को निभाने का वक्त था आगे देखती हूँ तो अब अपना जीवन जीने का मधुर सपना (जैसा मैंने कभी सोचती थी) पूरा कर रही हूँ मेरी किताबों की लिस्ट जो मैंने अभी तक तैयार की थी, वो किताबें खरीद रही हूँ एक कमरे को लायब्रेरी बना डाला अपना स्पेस बना लिया, मेरी प्राइवेसी की सब कदर करते है मेरी इस दुनिया में किताबें, कागज़, कलम है जो चाहती हूँ पढ़ती हूँ, लिखती हूँ, स्वतः सुखाय करते करते एक प्रयोग कर डाला, दूसरों की मदद करना अच्छा लगता था, धीरे धीरे उसमें भी दिल लगाने लगी एक अपराधबोध से घिरी रहती थी कि क्या मैंने इस जीवन की कल्पना की थी। जिम्मेदारियों को भी मैंने सहर्ष निभाया पर मनपसंद करने का लुत्फ़ अब उठा रही हूँ, कवितायें लिख रही हूँ, सुना रही हूँ, रिकार्ड कर रही हूँ दूसरों को अच्छा लगे तो खुश भी होती हूँ सुकून है।

फूल पौधों बगीचे से प्यार करने वालों, यदि ज़मीन नहीं हो हासिल तो गमलों में अपना बगीचा सजायें, सड़कों के किनारे वृक्ष लगायें स्कल्पचर, ड्रामा, थियेटर, गाना नृत्य उफ्फ कितना कुछ है जीवन में, धीरे धीरे अपनी दुनिया बनायें और उसमें रम जाये इसे बोझ कतई ना बनाना ये आपका शौक है जिम्मेदारी नहीं। एक ग्रुप बनायें घूमने निकल जायें, दुनिया के मेले में खो जायें। वैसे मैं जानती हूँ ये सब आपको पता है पर फिर भी लिख रही हूँ याद दिला रही हूँ कि जब तक ज़िंदा हो, जीवित रहो जो अच्छा लगे करते रहो, ये जीवन आपका है अपने तरीके से जियो। बहुत सोचा सबके बारे में, खुदगर्ज़ हो जाओ, खुद को बहलाओ, अपनी खुमारी में डूब जाओ, रूह तक एहसास जाने दो, सूफी हो जाओ फिर प्यार करो, फिर ख़त लिखो। अरे यार! तुम सब जानते हो किस चीज़ से तुम्हें खुशी मिलती है फिर देर किस बात की है खुद से पूछो रोज़ सुबह सवेरे और क्या कह रही है ज़िंदगी?

सहयोग

फोटो: गिरीश शर्मा

तानाशाही का दौर... बदहाल जिंदगी

❒ यूके से
प्रज्ञा मिश्रा

जर्मनी में 'एमरम' आइलैंड है, जहां लेखक हार्क बोह्म की जिंदगी का वो समय बीता, जब जर्मनी वर्ल्ड वॉर में हार गया था, उस समय हार्क की उम्र बारह बरस थी, पिता नाजी सेना के साथ लड़ाई लड़ रहे थे, उनकी मां तीन बच्चों (हार्क सबसे बड़े हैं) और एक आने वाले बच्चे के साथ पुश्तैनी घर एमरम में रहने लौट आती हैं। इस आइलैंड पर माहौल कुछ अलग है। यहां हिटलर को पसंद करने वालों की तादाद कम है और मां इस वजह से अकेली पड़ जाती है। इस दौर पर हार्क ने फिल्म बनाने की शुरुआत तो की, लेकिन बात कागजों से आगे नहीं बढ़ पाई। फिर आए जर्मन डायरेक्टर फतेह अकिन और उन्होंने जो जिम्मा उठाया तो न सिर्फ फिल्म बन कर तैयार है बल्कि कॉन प्रीमियर सेक्शन में इस साल फेस्टिवल में दिखाई जा रही है।

फिल्म में बच्चे का नाम है नैनिंग और खुद को, इस दुनिया को, इस जिंदगी को और अपने परिवार को समझने की कोशिश कर रहा है। स्कूल जाता है तो वहां बच्चे उसे बाहर का मानते हैं, क्योंकि शहर में पला-बढ़ा है, खेत में काम करने जाता है तो वहां उसे नाजी मान कर काम से निकाल दिया जाता है। मां की खुशी के लिए ब्रेड बटर और शहद की तलाश में कूव्वत से ज्यादा कोशिश करता है, लेकिन जब मां उस कोशिश को नजरअंदाज कर देती है तो उसकी बर्दाश्त से बाहर बात हो जाती है। अपने परिवार के बारे में बातें सुन लेता है। लोगों से भिड़ जाने की हिम्मत रखता है, लेकिन यहां उसकी समझ, शांत स्वभाव सब बिखर जाता है। दूसरी फिल्म है इराक में बनी **'द प्रेजिडेंट्स केक।'** नब्बे के दशक में जब सद्दाम हुसैन का शासन था और उनके जन्मदिन को पूरे देश में धूमधाम से मनाने के सरकारी आदेश थे। गरीब इलाके में रहने वाली नौ बरस की लामिआ को स्कूल में इस दिन का केक बनाने की जिम्मेदारी दी जाती है और उसके बाद जो होता है, न सिर्फ उस दौर की कहानी बयां करता है बल्कि मौजूदा दौर पर असर की भी झलक दिखाता है।

लामिआ और उसका दोस्त सइद स्कूल प्रोजेक्ट को पूरा करने के लिए अकेले ही शहर की गलियों में भटकते हैं, ढेरों काम करते हैं और आखिरकार जैसे- तैसे केक और फ्रूट्स स्कूल तक पहुंच जाते हैं। फिल्म के अंत में परदे पर सद्दाम हुसैन केक काटते हैं। यह बच्चे जर्मनी में हों या इराक में, 1940 के दशक में हों या 1990 के, एक बात इन्हें जोड़ती है कि इनके आसपास का माहौल, परिवार की सोच और हालात ऐसा सख्त माहौल को बनाते हैं, जहां उससे अलग होना बहुत मुश्किल है। एमरम में नैनिंग की मां हिटलर के खिलाफ एक शब्द भी नहीं सुन सकती और जब खबर आती है कि हिटलर ने आत्महत्या कर ली है तो डिप्रेशन में चली जाती है। बच्चे को मां और अपने भाई-बहन का ख्याल रखना होता है, लेकिन इस हालत में भी वो हिटलर का साथ नहीं भूलती।

लामिआ की दादी को इस बात से फर्क नहीं पड़ता कि बच्चे ने पढ़ाई की या नहीं या उसके पास कुछ खाने को है या नहीं, लेकिन इस बात में कोई समझौता नहीं है कि कितनी बार कुरआन की आयत दोहराना है। नैनिंग उर्फ हार्क की कहानी उनकी अपनी जिंदगी की कहानी है, वहीं लामिआ और सइद भले ही लिखे गए किरदार हैं, लेकिन फिल्म उतनी ही सच है और दोनों कहानियों में तानाशाहों के फैसलों से आने वाली पीढ़ियों की जिंदगी का यूं फैसला होते देखना दुःखदायी है।